

रसिक दोउ निरतत रंग भरे।
रास कुंज में रास मंडल रचि, जनक लली रघु लाल हरे।।
अमित रूप धरि करि कछु चेटक, जुग जुग तिय मधि श्याम अरे।।

दोहाः—जय जय जय मिथिलेशजा, जय अवधेश कुमार।
जय जय सीताशरण मम, जीवन प्राण अधार ॥

इति श्री युगल रहस्य माधुरी विलासे, साध्य कन्या रस रास रासे, सीताशरण सुमति प्रकाशे त्रयोदशोऽध्यायः सम्पूर्णमस्तु ।



* चतुर्दशोऽध्यायः *

* धुर धनुण्यार्के गुह्यकदेव कन्यारास प्रकरणम् *

छन्दरोलाः—

वदत विमल वर वयन विपुल विधि विशद विनोदा।
श्री मद् सूत सुजान सुनत शौनक लहें मोदा। १ ॥
प्रातः काल पुनीत ब्रह्म बेला सुखदाई।
नवल नायिका बृन्द युगल पद प्रेम बढ़ाई ॥ २ ॥
वीणा मधुर बजाय सरस प्रिय राग सुनाई।
नृत्यत हिय हर्षाय परम रस रंग समाई ॥ ३ ॥
गावहिं भैरवि राग मधुर मन हरन सरस तर।
गइ रजनी भयो भोर जागिये युगल रसिक वर ॥ ४ ॥
बाँचत विप्र सुवेद वन्दिगन विरद सुनावत।
बोलत शुक पिक हंस दरश हित हिय ललचावत ॥ ५ ॥
हे मम जीवन मूरि कृपामयि जनक दुलारी।
हे चितचोर किशोर रसिकमणि रासबिहारी ॥ ६ ॥
जय जय पूरित प्रेम भाव ग्राहक रस रूपा।
नित नव केलि कलोल मगन छबि सिन्धु अनूपा ॥ ७ ॥

परमानन्द प्रपूर सतत परिकर प्रिय कारक।
जय जय "सीताशरण" विशद वर यस विस्तारक ॥ ८ ॥
जय जय रमन रसेश मधुर रस रंजित सिय पिय।
नवल नायिका नेह पगे दोउ अति उदार हिय ॥ ९ ॥
जागिये हे हृदयेश युगल मम जीवन जीके।
गुनशीला रस रंग रमित सिय पिय अति नीके ॥१०॥
बोलहिं इमि वर वयन विमल बिधु बदनी बाला।
लेवहिं तान अलाप रंग भरि परम रसाला ॥११॥
कंकण किंकिणि नूपुरादि मणि गणन माल वर।
अपर अमित आभरण शब्द गूँजत प्रमोद कर ॥१२॥
सुनि सखियन के बचन रचन रस प्रेम समाने।
जागे नवल किशोर निरखि सिय छवि हुलसाने ॥१३॥
गहि कोमल कर कंज मधुर मृदु वयन सुधा सम।
बोले रसिक नरेश प्राणवल्लभ अति अनुपम ॥१४॥
जागिय जीवन मूरि विगत निशि भयो प्रभाता।
चहत प्रभाकर प्रगट होन पंकज सुखदाता ॥१५॥
बिपुल विशद बिधु बदनि बाल वर तुमहिं जगावहिं।
निरखन हित मुख कंज प्रभा हिय में ललचावहिं ॥१६॥
याते करि अति कृपा कृपामयि नयन उघारिय।
मुख मयंक मुसुकाय मधुर मम ओर निहारिय ॥१७॥
दर्शन प्यासी सखिन कृपा की कोर निहारी।
रस सागर में बोरि करिय सब भाँति सुखारी ॥१८॥

सुनि पिय के इमि वयन परम सुख दैन सरस तर।
प्रिया दिये दृग खोलि मन्द मुसुकाय हर्षि उर ॥१९॥
प्रीतम हिय ललचाय ललकि निज कण्ठ लगाई।
निरखत वर बिधु बदन बिमल रस रंग समाई ॥२०॥
परसत सरस कपोल चखत अधरामृत प्रमुदित।
वारत तन मन प्राण आपनो सर्वस मन चित ॥२१॥
पुनि पुनि हो वलिहार प्रिया पर अति सुख पावत।
अज अशेष परमेश सिया छवि निरखि बिकावत ॥२२॥
तिमि प्यारी पिय काहिं हरषि निज कण्ठ लगाई।
पीवहिं प्रेम पियूष पियहिं रस रंग रँगाई ॥२३॥
दृग सों दृगन मिलाय मन्द हँसि चितवनि बाँकी।
निरखत कलित कटाच्छ पिया की मति गति थाकी ॥२४॥
लखि सहचरी समूह प्रेमपगि जयति उचारी।
बिपुल सुमन बर्षाय तोरि तृण हो वलिहारी ॥२५॥
राई लोन उतारि सुदधि घृत मधु भरि थारा।
प्रीतम प्रियै दिखाय सखिन मन मोद अपारा ॥२६॥
असन बसन अरु रतन बिभूषन विपुल थार भरि।
सिय पियपर न्यौछाय वन्दि पद कंज मोद उर ॥२७॥
बैठीं सहचरि वृन्द सौज सेवा कर साजें।
चँवर छत्र वर व्यजन लिये चहुँदिशि सब भ्राजें ॥२८॥
आरति करि गुनशिला युगल चरणन शिर धरि के।
पायो परमानन्द प्यार अपने उर भरि के ॥२९॥

तब सर्वेश्वरि चारुशिलादिक सकल नागरी।
लागीं मङ्गल करन मोद भरि रस उजागरी ॥३०॥
पुनि पगि प्यार पुनीत दन्तधावन करवाई।
अंग उबटि भरि मोद दोउन अस्नान कराई ॥३१॥
अंगराग तन लेपि विमल वर बसन बिभूषन।
दम्पति सरस सु वेष सजाये सखिन अदूषन ॥३२॥
पिय प्यारी पगि प्रेम प्रीति पूरित प्रिय परिकर।
गवने रमा सु केलि बिपिन मधि हिय उमंग भर ॥३३॥
विपुल नवल नायिका नेह माती रँग रातीं।
दम्पति छबि माधुरी पान करि हिय न अघातीं ॥३४॥
चित्ताकर्षक रूप मनोरम परम सुखद वर।
कोटिन सखि गन करन लिये पंकज विनोद कर ॥३५॥
करहिं केलि कमनीय कला कौतुक कलोल वर।
पावहिं परमानन्द प्रेम पूरित उदार उर ॥३६॥
तिन आलिन के मध्य परम सुषमा निधि दम्पति।
विलसत बिपुल बिनोद वलित सखियन सत सम्पति ॥३७॥
मन्द मन्द मुसुकाय मैथिली मंजुल मूरति।
कर कंजन में लिये ललित पंकज सुठि सूरति ॥३८॥
शोभित श्याम कटाच्छ सरस तम सुखद मनोहर।
प्रीतम लखि ललचाय पकरि कर कंज प्यार भर ॥३९॥
हँसि निज कण्ठ लगाय बिपुल बिधि विशद बिहारा।
करन लगे हृदयेश रासरस रमण उदारा ॥४०॥

रमा विपिन के बीच एक वर महल सुहावन ।
रम्भावली समूह बृक्ष चहुँदिशि मन भावन ।४१॥
अपर बिपुल वर बिटप सुमन शोभित सरसावत ।
उड़त सुगन्ध झकोर अवनि अनुपम छबि छावत ॥४२॥
चुइ चुइ झरत मरन्द भूमि भूषित न लखाई ।
सुमनन पर अलि बृन्द मधुर गुंजत इठलाई ॥४३॥
पान करत मकरन्द प्रेम पागि अति मद माते ।
गावत युगल किशोर चरित रस मय हर्षाते ॥४४॥
स्वर्ण रत्न मणि रचित खचित अति अमल अनूपा ।
अतिसय मंजुल महल मोद कर तहँ रस रूपा ॥४५॥
प्रीतम प्रिया प्रवीण प्रेम पागे प्रिय परिकर ।
बिलसत बिपुल विनोद वलित बहु बिधि विहार वर ॥४६॥
मन में मंजु मनोर्थ मदन मद भरे युगल वर ।
क्रीड़त बिबिधि प्रकार परस्पर भरि उमंग उर ॥४७॥
दोउ को दोउ श्रृंगार उतारत करत नवल पुनि ।
गावत मृदु स्वर राग सरस परिकर प्रसन्न सुनि ॥४८॥
कहुँ क्रीड़ा मृग संग मधुर दम्पति रस पागे ।
क्रीड़त अति सुख पाय मंजु मूरति अनुरागे ॥४९॥
स्वर्ण पींजड़े माहिं सखिन शुक पिक गन पाले ।
कहुँ खेलत तिन संग रंग रँगि रसिक निराले ॥५०॥
कबहूँ सखियन केर केलि कौतुक प्रिय निरखत ।
लखि तिन केर बिबाद परस्पर दम्पति हरषत ॥५१॥

सजवावत मन मुदित सखिन से कहुँ रासस्थल ।
करत सरस प्रिय राम सखिन सुख दान केलि कल ॥५२॥
परम समर्थ उदार प्रेम पूरित रघुनन्दन ।
सुनत सरस संगीत मधुर मन हर जगवन्दन ॥५३॥
कबहुँ सहचरिन संग रंग पगि कामशास्त्र वर ।
चिन्तन करत सनेह शील सागर विनोद घर ॥५४॥
सरस सुगन्धिन युक्त बिबिधि भोजन पकवाना ।
पावत युगलकिशोर सखिन सँग परम सुजाना ॥५५॥
सुधा सरिस बहु स्वाद भरे अनुपम अनेक रस ।
शुचि तर वर प्रिय मधुर नायिका संग नेह बस ॥५६॥
पीवत परम प्रवीण प्रिया प्रीतम सुख पागे ।
झूलत कबहुँ हिंडोल मन्द हँसि दोउ गर लागे ॥५७॥
गावहिं मेघ मलार गौड़ सावन वर वाला ।
झूलहिं पिय के संग झुलावहिं लखि छबि जाला ॥५८॥
करहिं विनोद बिहार विपुल विधि विशद सुखद वर ।
सुमन कुंज के मध्य प्रिया प्रीतम उदार तर ॥५९॥
बाग बिहार अपार मार मद मथन सुछबि धर ।
करत सहचरिन संग रंग रँगि रूप रसिक वर ॥६०॥
कबहुँ करत जल केलि सखिन सँग सिय रघुराई ।
पावत परमानन्द परम रस रंग समाई ॥६१॥
प्रीतम पगि अति प्यार पकरि कोइ मुग्धा आली ।
लै जावत जल अगम मध्य सो परम विहाली ॥६२॥

लपटत पिय के कण्ठ छोड़ि तेहि रसिक नरेशा ।
गवने सो घबराय कहति पिय हृदयेशा ॥६३॥
हे जीवन धन लाल बचावहु प्राण अधारे ।
अस लीला नहिं भली राजनन्दन सुकुमारे ॥६४॥
मैं सिय स्वामिनि निकट जाय कहिहौं सब बाता ।
तब पइहो फल लाल खेल यह मोहिं न सुहाता ॥६५॥
सुनि पिय मृदु मुसुकाय पकरि कर कंज प्यार भरि ।
दीनो वाहि निकारि श्याम सुन्दर विनोद करि ।६६॥
केहु सखि के पग पकरि छोरि नूपुर रस सागर ।
जल में देत हिराय रास रसिया प्रिय नागर ॥६७॥
पुनि खोजत रस पगे प्रेम लम्पट रस रूपा ।
देत बिबिधि सुख स्वाद सखिन को अमल अनूपा ॥६८॥
कहुँ तोरत कर कंज कंज के सुमन सुहावन ।
मारत सखियन अंग माहिं मोहन मन भावन ॥६९॥
कबहुँ वाटिका मध्य विराजत सखिन समेता ।
सजत सुमन श्रृंगार प्रिया को परम सचेता ॥७०॥
तैसेहिं प्रिया प्रवीण पिया को सुभग श्रृंगारा ।
करहिं हृदय हर्षाय सुमन वर बिबिधि प्रकारा ॥७१॥
पुनि दोउ की छवि निरखि परस्पर रति रस पागे ।
पुनि पुनि हो वलिहार तोरि त्रण हँसि हिय लागे ॥७२।
राई लोनि उतारि पियत दोउ वारि वारि कर ।
पावत परमानन्द प्रेम पूरित प्रमोद घर ॥७३।

दृग सों दृगन मिलाय अधर रस चखि दोउ छवि धर ।
अरुझाने अँग अंग रंग रस पगे युगल वर ॥७४॥
सखि सब हिय उमगाय प्रिया प्रीतमहिं शृँगारत ।
जोगी सुभग निहारि सकल निज तन मन वारत ।७५॥
प्रीतम प्राण अधार सखिन को स्वकर शृँगारा ।
करत हृदय हर्षाय रमण रस रसिक उदारा ।७६॥
पुनि हँसि कण्ठ लगाय सबनि सँग रसिक नरेशा ।
विहरत विविधि प्रकार विपिन बिच प्रिय हृदयेशा ॥७७॥
करत केलि कमनीय कला कुशला नव नायक ।
सुन्दरता रस सिन्धु प्रेम पूरक सब लायक ॥७८॥
गुप्त निकुंजन माहिं परम रस केलि मधुर तर ।
करत हृदय हर्षाय स्वजन मन हर प्रमोद कर ॥७९॥
यहि विधि बीतत दिवसरैनि सधि रास सुहावन ।
करत रसिक शिरताज राजनन्दन मन भावन ॥८०॥
रस क्रीड़ा कल कुशल केलि लम्पट रमनीया ।
रमि रमाय सुख लेत देत सब को कमनीया ॥८१॥
समय समय अनुसार सखिन अनुकूल सुलीला ।
करत युगल सरकार मधुर मन हरन रसीला ॥८२॥
कबहूँ ललित तमाल लता कुंजन में छवि धर ।
आच्छादित हो स्वयं प्राण प्रीतम प्रमोद भर ॥८३॥
अतिसय सघन तमाल लता कुंजन में कहुँ पिय ।
छिपत चतुर चितचोर चपल चूड़ामणि शुचि हिय ॥८४॥

किन्तु अमल आभरण प्रभा पूरित बन माहीं ।
याते खोजत सखी तुरत पावत पिय काहीं ॥८५॥
जहँ जहँ छिपत रसेश क्रीट कुण्डल प्रकाश कर ।
जग मग ज्योति जगाय तुरत पकरावत छबिधर ॥८६॥
जिमि मध्यान दिनेश कान्ति कोउ सक न छिपाई ।
तिमि छिप सकत न कान्त सखी खोजहिं हर्षाई ॥८७॥
इमि विधु बदनी वाल बृन्द बिच बिपुल बिहारा ।
करत सबनि मन हरत देत सुख स्वाद अपारा ॥८८॥
बिपुल बिटप वर बेलि मध्य बिचरत विनोद कर ।
रमा केलि बन माहिं लाल रति रस लम्पट तर ॥८९॥
ललित लता लावण्य विटप वर कुंज सु शोभा ।
निरखत सखिन समेत राजनन्दन मन लोभा ॥९०॥
कबहुँ स्वर्ण सम सुभग लतन विच सिय सुकुमारी ।
छिपि जावहिं मन मुदित खोजि हारत धनुधारी ॥९१॥
जब न मिलहिं मैथिली बिटप ऊँचे चढ़ि रघुवर ।
अन्वेषत सिय काहिं नहीं पावत पिय छबिधर ॥९२॥
तब अति करुण सहित उच्च स्वर करहिं विलापा ।
हँसि प्रगटैं लाड़िली सुनत पिय केर कलापा ॥९३॥
लखि सिय बदन मयंक प्राण वल्लभ सुख सागर ।
पावत परमानन्द प्रेम पूरक प्रिय नागर ॥९४॥
प्रिया केर सौन्दर्य महा माधुर्य रूप गुन ।
गान करत रसिकेश श्याम सुन्दर उदार मन ॥९५॥

नृत्यत भरि अनुराग प्रियै बहु भाँति रिझावत ।
प्रीतम प्राण अधार रसिक मनहर रस छावत ॥९६॥
छिपहिं कबहुँ मैथिली विपिन में खोजत प्यारे ।
चले जात बड़ि दूरि राजनन्दन सुकुमारे ॥९७॥
तब कोइ सखी सुजान मैथिली सरिस मधुर स्वर ।
कोमल सुधा सदृष्य सरस मन हरन प्यार भर ॥९८॥
बोलति हे हृदयेश प्राण वल्लभ सनेह घर ।
कहाँ गये पिय चले चतुर चूड़ामणि छवि धर ॥९९॥

दोहा:—मैं तो हूँ यहि ठौर ही, पर हे राजकुमार ।
गवने रसिक नरेश कित, सीताशरण अधार ॥ १ ॥

सुनि सखि के वर वैन मधुर सुख दैन सरस तर ।
आये पिय चित चोर चपल रसनिधि प्रमोद भर ॥ १ ॥
लागी सो सखि हँसन पिया की सुछबि निहारी ।
लखि लौटे प्राणेश नृपति सुत रास विहारी ॥ २ ॥
तब तक दूसरि ओर सखी सिय के स्वर माहीं ।
बोलति हे हृदयेश नाथ आइय मोहिं पाहीं ॥ ३ ॥
सुनि गमने उत लाल परम रस सिन्धु समाये ।
लखीं न तहँ मैथिली तुरत लौटत सकुचाये ॥ ४ ॥
यहि विधि जित तित ओर सखी पिय काहिं बुलावैं ।
जावत लखत न प्रिया प्रेम मय अश्रु बहावैं ॥ ५ ॥
भरि करुणा उर माहिं करत क्रन्दन रघुनन्दन ।
अज अजीत अनवद्य प्रेमै रस वश जगवन्दन ॥ ६ ॥

बोलत जीवन मूरि प्राण वल्लभे हमारी।
मनोरमे सब भाँति मोहिं प्राणन ते प्यारी ॥ ७ ॥
मोहिं त्यागि बन मध्य अकेले कहाँ सिधारी।
मो कहँ तुम्हरो रूप सकल बन परत निहारी ॥ ८ ॥
पर न लखौं मैं तुमहिं कहाँ छिप गईं दुलारी।
आइय आइय शीघ्र कृपा करि प्राण अधारी ॥ ९ ॥
कोई सखि लखि विकल पियै प्यारी की मूरति।
भूषण बसन सजाय काष्ठ कृत अति सुठि सूरति ॥१०॥
काहू थल पधराय पिया को करति इसारा।
लखि पिय हिय हर्षाय मुदित मन राजकुमारा ॥११॥
रस वश हृदय लगाय चूमि मुख अंक बिठाई।
मर्दन करत उरोज काष्ट गुनि परम लजाई ॥१२॥
तब अति होत उदास महा कामी समान पिय।
लीला रस वश लाल परम परमीश विमल हिय ॥१३॥
लखि पिय की यह केलि कलित कमनीय सरस तर।
बोलि उठीं सब सखीं बचन प्रिय मधुर मोद कर ॥१४॥
हे रसिकेश नरेश सुवन हम सब के स्वामी।
हम अगणित सखि वृन्द सतत तव पद अनुगामी ॥१५॥
नित तुम्हरी रुचि रखहिं हमनि सँग विपुल विहारा।
करत रसिक शिरताज राजसुत परम उदारा ॥१६॥
सुर नर दानव दैत्य सबनि दुर्लभ वर वामा।
तिन सँग रमत रसेश सतत पिय मन अभिरामा ॥१७॥

तबहूँ भये न तृप्त प्राण जीवन धन प्यारे।
सो अब काष्ठ पषान मूर्ति चुम्बत सुकुमारे ॥१८॥
रमि हम सब के साथ न पिय पायो सन्तोषा।
सो अब पुतलिन काहिं लाय उर जानि अदोषा ॥१९॥
लहन चहत सन्तोष आप की हौं बलिहारी।
लाज न लागत तुमहिं करत यह खेल सुखारी ॥२०॥
अस कामातुर भये लाल संकोच बिसारी।
गुनशीला गुन ज्ञान गम्य रस रास विहारी ॥२१॥
श्री पद्मादिक प्रमुख सखिन इमि बयन सुनाये।
सुनि रसिकेश नरेश तनय हिय अति सकुचाये ॥२२॥
मानहुँ लज्जा बिवस स्वतन मधि चहत समावन।
उत्तर चाहत देन प्राण जीवन मन भावन ॥२३॥
तब तक कोइ इक सखी अलग से पियैं बुलाई।
बोली बचन रसाल मधुर प्रिय नेह जनाई ॥२४॥
हे हृदयेश उदार कृपा कर यहाँ सिधारिय।
कोठे ऊपर शिखर तहाँ स्वामिनी निहारिय ॥२५॥
सुनि वाके प्रिय बचन परम रस सिन्धु समाने।
गमने राजकिशोर हृदय में अति ललचाने ॥२६॥
लखि न परीं तहँ प्रिया बिपिन मधि मणि वेदी पर।
बैठीं श्री मैथिली दृगन भर लखीं रसिक वर ॥२७॥
पुनि कोठे से उतरि वेदिका निकट पधारे।
तहाँ न पाईं प्रिया द्वार पर लखत दुलारे ॥२८॥

जब द्वारे पर गये प्रिया को तहाँ न पाये।
पुनि वेदी पर निरखि ललन मन में ललचाये ॥२९॥
जब आगे पिय जात पीठ पीछे सिय प्यारी।
बोलैं मधुरे वयन परम सुख दैन दुलारी ॥३०॥
छू प्रीतम की पीठ मधुर प्रिय बचन सरस तर।
बोलहिं मैं हूँ यहाँ प्राण वल्लभ रसेश वर ॥३१॥
पिय आगे कहँ जात यहाँ आइय सुकुमारे।
जीवन धन चितचोर राजनन्दन मनहारे ॥३२॥
जब पिय पीछे लखत खड़ी तब तक सिय आगे।
आलिङ्गन हित लाल चलत तब अति अनुरागे ॥३३॥
तब तक श्री मैथिली बहुरि पिय पीछे जाई।
बोलहिं हे मन हरन प्राण वल्लभ सुखदाई। ३४॥
इमि सिय भूषण कर शब्द जहँ पिय सुनि पावत।
विह्वल प्रेम विभोर राजनन्दन तहँ धावत ॥३५॥
यहि विधि जित तित जात ललन अति रति रस पागे।
प्रेमावेश विशेष प्रिया सुरति अनुरागे ॥३६॥
श्री मैथिली सुअंग गन्ध से लुब्ध मधुप सम।
घूमत नवल किशोर परम रस बोर सुभग तम ॥३७॥
धावत जित तित लाल प्रिया को जब नहिं पावत।
तब रसिकेश सुजान हृदय में अति पछितावत ॥३८॥
प्यारी विषम वियोग विवश काहू थल प्यारे।
स्थित हो न सकात अवध नृप नयनन तारे ॥३९॥

पगि प्यारी की प्रीति जात जहँ जहँ रसिकेश्वर ।
तहँ तहँ पीछे जात मैथिली हृदय मोद भर ॥४०॥
जहँ जहँ खोजत सियहि प्राण वल्लभ अकुलाई ।
तहँ तहँ श्री मैथिली अछत नहिं परहिं दिखाई ॥४१॥
अस सिय केर प्रभाव लखत रसिकेश सुघर वर ।
अतिसय संभ्रम पड़े प्रेम पूरित प्रमोद घर ॥४२॥
जैसे शक्ति वियोग प्राण नाहिन सहि पावत ।
तिमि सब भाँति समर्थ पिया सियबिन दुख छावत ॥४३॥
यद्यपि श्री मैथिली सतत पिय कण्ठ विराजत ।
योग क्षेम करि देह केर देहहिं में भ्राजत ॥४४॥
पिय की अर्द्धाङ्गिनी प्राण की जीवन मूरी ।
पिय को सब सुख दानि परम प्रेमामृत पूरी ॥४५॥
यह अवसर लखि मदन प्रिया युत रामकुँवर पर ।
छोड़े पंच सुबाण कियो मेघन उछाह भर ॥४६॥
यह इच्छामय मदन परम सेवक पिय केरो ।
सेवा संतत करति देत सुख स्वाद घनेरो ॥४७॥
जब मन्मथ मन मुदित आपनो बल दिखलायो ।
वेधन हित पिय हृदय परम उत्साह बढ़ायो ॥४८॥
निज करनी करि थकेउ पिया मन काम न व्यापा ।
अन्तष्करण न विधेउ स्वयं पायेउ संतापा ॥४९॥
किन्तु प्राण जीवनी आपनी सर्वस सिय बिन ।
विस्तृतात्मा भये बिसरि अपनी सुधि तन मन ॥५०॥

को हम हैं केहि ठाँव करत क्या कछु सुरति उर।
प्यारी विषम वियोग लाल व्याकुल विशेष तर ॥५१॥
याही से पिय हृदय मदन महिमा न दिखाई।
प्रिया प्रेम परतन्त्र देह की सुरति भुलाई ॥५२॥
इधर पिया के प्राण करन धारण सिय को तन।
निवसत सिय की देह माहिं रघुवीर रैन दिन ॥५३॥
प्राण प्रिया के विना पिया तन में नहिं प्राना।
ऐसे प्रेमाशक्त रहत रसिकेश सुजाना ॥५४॥
अस देवी कमनीय मैथिली कृपा स्वरूपा।
क्रीड़न शील प्रसन्न वदन वर विमल अनूपा ॥५५॥
पिय को चित्ताकर्ष प्रेम रस भरित नयन प्रिय।
कलित कटाक्ष समेत लखत पिय को प्रसन्न हिय ॥५६॥
ऐसी श्री अवनिजा प्रेम मय मंजुल मूरति।
रतिरस निपुण रसज्ञ गौर सुषमा निधि सूरति ॥५७॥
मदन वाण से व्यथित पिया को हृदय निहारी।
स्वेद कणन युत वदन परम शोभित मन हारी ॥५८॥
प्रगटीं श्री मैथिली मन्द हँसि पिय के आगे।
करि कटाक्ष कमनीय केलि कौतुक रस पागे ॥५९॥
प्रिया हँसन को भाव आप बड़ वीर कहावत।
सकल कला कल कुशल पुरुषता सबनि बतावत ॥६०॥
हमको अवला कहत सबल अपने को मानत।
सब से अति वलवान नाथ तुम आपुहिं जानत। ६१॥

आज निरखि मम कला पराजय भये सुघर वर ।
कहाँ गई वीरता आज कहिये उदार तर ।।६२।।
अस निज हृदय विचारि हँसीं मिथिलेश किशोरी ।
पिय की जीवन मूरि मधुर मंजुल रस बोरी ।।६३।।
लखि पिय प्रेम विभोर पकरि हँसि कण्ठ लगाई ।
निज सु अंक बैठाय प्यार युत हिय लपटाई ।।६४।।
निरखत वर विधु बदन विमल बहु ललित विनोदा ।
पावत परमानन्द प्रेम पगि पिय मन मोदा ।।६५।।
अमृत वल्ली सदृश प्रिया को पाय नृपति सुत ।
पीवत प्रेम पियूष प्राण प्रीतम प्रमोद युत ।।६६।।
जिमि कोई अति अज्ञ महा विद्या निधि पाई ।
अथवा कोई रंक पाय नृप पद हर्षाई ।।६७।।
या कोइ साधक कदा सकल सिद्धी जब पावै ।
अथवा ज्ञानी पुरुष आत्मा निज लखि पावै ।।६८।।
आत्मसात सम लाभ अपर जग में कोइ नाहीं ।
तेहि ते "सीताशरण" कोटि गुण पिय सुख लहहीं ।।६९।।
साक्षात् लक्ष्मी पाय सौभाग्य वान जिमि ।
होवै अतिसय सुखी होत प्रीतम मन में तिमि ।।७०।।
मुख मयंक मृदु मधुर सुधा सब चखत चतुर वर ।
राजकिशोर रसज्ञ रास रसिया सुजान तर ।।७१।।
वर्द्धक प्रीति प्रतीति अमृत मय ललित लता सम ।
अति कल्याण स्वरूप प्राण प्यारी सुशील तम ।।७२।।

बोले लखि मुख कंज मंजु प्रणयी प्रवीण वर ।
जीवन प्राण अधार रसिक चूड़ामणि छवि घर ।।७३।।
हे मम प्रिया प्रवीणा आज हम सब विधि हारे ।
अबला सबला जानि तुमहिं पर सर्वस वारे ।।७४।।
तव चपलता निहारि लाजि चपला हिय हारी ।
तुम मन की गति जीति लई सब विधि हे प्यारी ।।७५।।
तव तन प्रभा निहारी प्रभाकर गयो लजाई ।
अपर सकल ग्रह हारि कान्तिहत परत दिखाई ।।७६।।
मन से चंचल प्रिया अपर जग में कोउ नाहीं ।
तेहि ते शत गुणि लखी चपलता तव तन माहीं ।।७७।।
इस त्रय लोक मझार अपर अस कोइ तिय नाहीं ।
तव सम शील स्वभाव रूप गुण हो जेहि माहीं ।।७८।।
यद्यपि न तुम सम एक तदपि सुन्दर बहु नारी ।
निज पति मोहन हार रूप गुण शील उजारी ।।७९।।
तुम जिमि निज गुण रूप शील कीनो मो कहँ वस ।
अपर न "सीताशरण" नायिका तुम समान अस ।।८०।।
हे मम जीवन मूरि सुन्दराङ्गी तव कुन्तल ।
जीति मयूर सु पक्ष मेघ मधुकर शोभित भल ।।८१।।
वेणी सुभग निहारि नागिनी बृन्द लजावें ।
निरखि विमल बिधु बदन शरद निशि शशिसकुचावें ।।८२।।
भाल रसाल विलोकि अर्ध चन्द्रहु सरमाई ।
भृकुटि कुटिल कमनीय लखत धनु काम लजाई ।।८३।।

अंजन युत प्रिय नयन मीन मृग कमल लजावन ।
सकुचत खंजन मंजु पिया मन मोद बढ़ावन ॥८४॥
कलित कटाच्छ बिलोकि मदन के वाण लजावत ।
मन्द मधुर मुसुकान लखत चाँदनि सकुचावत ॥८५॥
सहज अरुण प्रिय सरस अधर लखि लजत विम्ब फल ।
जानत स्वाद रसाल लाल रसिकेश चखत भल ॥८६॥
दन्त पंक्ति कमनीय निरखि दाड़िम सकुचावैं ।
पद्मराग मणि निकर दशन सम कान्ति न पावैं ॥८७॥
सुधा विनिन्दक मधुर सरस प्रिय गिरा सुहावन ।
सुठि शारद की वीण कलित कोकिल सकुचावन ॥८८॥
मोती सम सुठि सुभग सरस प्रिय मधुर बोल वर ।
कलित कपोत सु कण्ठ शङ्ख की ललित प्रभा हर ॥८९॥
अमल आभरण भरित भुजा करि कर सम सुन्दर ।
उपमा अपर अनूप वनज वर नाल छटा हर ॥९०॥
मधु पूरित स्तनन विल्व फल दीन लजाई ।
मध्य भाग कटि देश लखत केहरि सकुचाई ॥९१॥
सुन्दर उरू निहार लजत रंभा अपने मन ।
वर विलास गति गमन निरखि लाजत करि वर तन ॥९२॥
उपमा औरौ एक चाल लखि हंस लजावत ।
चरण कमल कमनीय कलित कमलन सकुचावत ॥९३॥
सुठि सर्वाङ्ग विलोकि स्वर्ण को पिण्ड लजाई ।
कोमलता सरसता रूप लखि रति सरमाई ॥९४॥

हे प्राणधिक प्रिये शुभे हे तव स्वभाव पर ।
कोमलता को निरखि सुमन लज्जित होवत उर ।।९५।।
हे प्यारी जग माहिं कान्ति धर जौन शरीरी ।
सो सब लखि तव कान्ति नमित शिर सकुच लहीरी ।।९६।।
यहि विधि जब रसिकेश प्रेम पाथोधि मगन मन ।
वर्णी सिय सर्वाङ्ग परम शोभा स्वरूप तन ।।९७।।
सुनि पिय के इमि बचन मधुर रस प्रेम समाने ।
प्रिया कलित कर कंज बिहँसि पिय बहु सनमाने ।।९८।।
बोलीं बचन विनीत विमल वर बदन निहारी ।
हे प्राणेश उदार श्याम सुन्दर बलिहारी ।।९९।।
हे रसिकेश सुजान चतुर चित चोर चपल तर ।
"सीताशरण" अधार छैल मन हरन सुभग वर ।।१००।।

दोहा:-हे हृदयेश हृदय रमण, हिय में विहरन हार ।
हँसि हेरनि मन चित हरनि, सीताशरण अधार ।। २ ।।

प्रिया वचन इमि सुनत रसिक मन हर मुसुकाई ।
पावत परमानन्द प्रियै निज कण्ठ लगाई ।। १ ।।
पुनि प्यारी मन मुदित पिया के युगल चरण वर ।
अतिसय प्रेम समेत धारि अपने उरोज पर । २ ।।
पुनि निज मृदु कर कंज परसि सर्वाङ्ग पिया को ।
मार्जन करि श्रम हरेउ दियो परितोष जिया को ।। ३ ।।
अखिल लोक अभिराम काम पूरक मनोज हर ।
दायक परमानन्द द्वन्द हर परम रसिक वर ।। ४ ।।

प्रेमिन प्राणाधार प्रीति पूरित प्रमोद कर
सकल शोक श्रम हरन भरन रति रस सुशील तर ॥ ५ ॥
परम तत्व परमीश परम गति परम प्रकाशक।
परमानन्द परेश परम प्रतिभा प्रतिकाशक ॥ ६ ॥
ऐसेउ प्रभु सुख दैन प्रिया कर परस पाय कर।
भये विगत श्रम सकल मोद पायो अपने उर ॥ ७ ॥
प्रथम सरिस वल शक्ति धैर्य तन माहिं जनावत।
गुनि अपनो बड़भाग प्रियै बहु भाँति रिझावत ॥ ८ ॥
तब तन चित्र विचित्र सकल अंगन वर भूषण।
अमल अनूप अनेक परम मन हरन अदूषण ॥ ९ ॥
पहिरे राजकिशोर मधुर रस बोर सुछवि धर।
विहरन बिपिन मझार चकोरिन उर प्रमोद कर ॥१०॥
क्रीड़ामृत कमनीय सरस प्रिय सुखद सुहावन।
करत फिरत रसिकेश श्याम सुन्दर मन भावन ॥११॥
निज तन विमल प्रकाश व्योम तम दूर भगावत।
वन मधि करि कल केलि हृदय में अति हर्षावत ॥१२॥
पुनि लखि कलित निशेश करन सुठि रास विहारा।
अपने मन रुचि कीन प्रगट रघुवंश कुमारा ॥१३॥
पिय की अस रुचि जानि चन्द्र सब कला प्रकाशा।
रस रसिया मन मुदित सखिन सुख स्वाद विकाशा ॥१४॥
सहचरि बृन्द सिहाय प्रिया प्रीतम को सुखरस।
वर्द्धन हित बहु यत्न करत अतिसय सनेह बस ॥१५॥

विपिन व्योम अरु भूमि पियहिं उद्दीप न हेता।
बिबिध बस्तु प्रगटाय करत बहु यत्न सचेता ॥१६॥
पिय अभीष्ट की सिद्धि करन हित रमा विपिन में।
उनकी ही रुचि जानि करन सेवा निज मन में ॥१७॥
केहु थल सरस बसन्त कहीं ग्रीषम कहुँ वर्षा।
कहीं शरद हेमन्त शिशिर ऋतु लसत सहर्षा ॥१८॥
निज निज साज समाज सहित सब ऋतु सुख पाई।
सेवा हित मन मुदित उपस्थित सकल सिहाई ॥१९॥
कहुँ बसन्त ऋतु माहिं शरद का भाव जनावै।
ऋतु हेमन्त मझार कहीं ग्रीषम दर्शावै ॥२०॥
जो ऋतु का जो कुंज वही ऋतु की सब सम्पति।
परिपूरित हो रही करन सेवा हित दम्पति ॥२१॥
वही सुऋतु सर्वत्र कुंज में परत दिखाई।
जेहि ऋतु की वर केलि होत जहँ सुखद सुहाई ॥२२॥
षट ऋतु केर विभाग बन्यो तेहि विपिन मझारी।
केहु केहु कुंज मझार भाव विपरीत निहारी ॥२३॥
रास रसिक रसिकेश राजनन्दन रस सागर।
रति रस लम्पट लाल जाल छवि प्रिय नव नागर ॥२४॥
श्री मैथिली सनेह सुधा भाजन रुचि पालक।
रामागण मन सुखद मधुर तर सब सुख घालक ॥२५॥
गुह्यक देवन सुता तिनहिं आज्ञा हर्षाई।
दई नृपेन्द्र कुमार हृदय में मोद बढ़ाई ॥२६॥

तुम सब रास बिधान सविधि अब करहु सुखारी ।
सुनि अतिमय हर्षाय पिया आयसु शिर धारी ॥२७॥
कीनो रास विधान मनोहारी सब बाला ।
रासस्थली प्रविष्ट भईं सुठि सुभग रसाला ॥२८॥
परम मधुर प्रिय सरस ललित संगीत उचारी ।
बाजे विपुल बजाय राग गावहिं मन हारी ॥२९॥
नृत्यैं हिय हर्षाय प्रेम पूरित प्रमदागन ।
सुनि सुठि सरस सुगीत उठे रसिकेश मोद मन ॥३०॥
भूषण बसन अमोल अलंकृत कियो सुभग तन ।
कुण्डल कलित कलोल करत शिर क्रीट सुहावन ॥३१॥
शोभित सुषमा सदन मदन मद मथन सुमन हर ।
वाम अङ्ग अभिराम मैथिली लसत सुभग तर ॥३२॥
सुन्दर बसन अनूप अमल आभरण अमित वर ।
जागति जग जग ज्योति परम प्रतिभा प्रकाश कर ॥३३॥
रासस्थल के मध्य रत्न मय ललित सिंहासन ।
ता पर भये विराज मान दम्पति प्रसन्न मन ॥३४॥
चहुँदिशि सखी समाज सुभग अति प्रिय सिय केरी ।
प्रमुदित लसैं अनूप रूप गुण शील घनेरी ॥३५॥
अङ्ग राग तन दिव्य बसन आभरण भव्य भल ।
भूषित भूरि प्रकाश प्रभा प्रगटत अद्भुत कल ॥३६॥
गुह्यक देवन सुतनि नृत्य अद्भुत अनूप वर ।
आश्चर्य युत लखत चतुर चितचोर मोद भर ॥३७॥

श्री मैथिली समेत राजनन्दन नवीन वय।
निरखत रस मय रास करत क्रीड़ा सनेह मय ॥३८॥
प्रगटत नवल तरङ्ग सबहिं उत्साह बढ़ाई।
नृत्यत भरि अनुराग तिनहिं कर पकरि नचाई ॥३९॥
करत प्रशंसा भूरि भाव भरि रूप रसिक वर।
मारत नयन कटाक्ष परम तीक्षण नव छवि धर ॥४०॥
प्रिया अंश भुज दिये मन्द मुसुकात छबीले।
चितय सखिन चितचोरि चतुर गुण गण गर्वीले ॥४१॥
करत केलि कमनीय कला कुशला नव नागर।
रति रस लम्पट लाल काम पूरक रस सागर ॥४२॥
तिमि गुह्यक सुर सुता केलि रस पगीं सयानी।
नृत्यहिं चक्राकार गीत गावहिं मृदु बानी ॥४३॥
चितवहिं चंचल चखन तुचुरि चित चोरन हारी।
नयन शयन दै कलित कटाक्षण करत प्रहारी ॥४४॥
कछु सखि यूथन चक्र चलत दहिने से बायें।
अपर चक्र कछु लखत चलत बायें से दायें ॥४५॥
यहि विधि चक्राकार सखी नृत्यत दुहुँ ओरी।
पावत परमानन्द प्यार पूरित रस बोरी ॥४६॥
अमृत रक्षक यथा भानु शशि तासु शत्रु वर।
राहु परम बलवान चढ़ाई करत मोद भर ॥४७॥
जब राहू रथ चक्र चलत दहिने दिशि ओरी।
तब वाईं दिशि चलत चक्र शशिभानु अथोरी ॥४८॥

दोउ सन्मुख दोउ चलत सखिन के यूथ चक्रवर।
नृत्यैं सहित सनेह युगल छवि निरखि प्यार भर ।४९।।
नटत सकल नायिका सु चक्राकार माल सम।
लसत सकल बन मध्य ललित चपला सम अनुपम ।।५०।।
निज तन केर प्रकाश विपिन में कीन प्रकाशा।
पिय संग रति रस रमण करत मुख कमल विकाशा ।।५१।।
अनुपमेय सब भाँति रसिक वर योग्य सखी गन।
गुह्यक देवन बाल परम छवि जाल मुदित मन ।।५२।।
चहुँदिशि नृत्यत वाम राम मण्डल चक्राकृत।
मध्य शरद कालीन कमल दल सदृश नयन युत ।।५३।।
लालन लसत अनूप रूप सुषमा निधि प्रमुदित।
वाम भाग अभिराम प्रिया सोहैं प्रसन्न चित ।।५४।।
श्री मैथिली उदार पिया की जीवन मूरी।
सखियन प्राणाधार भाव भूषित रस पूरी ।।५५।।
यद्यपि नटत न प्रिया तदपि यहि भाँति लखावत।
मानहुँ नृत्यत खड़ीं परम शोभा प्रगटावत ।।५६।।
रास मण्डल के मध्य राजनन्दन सँग शोभित।
लखि मैथिली स्वरूप प्राण वल्लभ मन लोभित ।।५७।।
चहुँदिशि अतिसय वेग सहित नृत्यत नव बाला।
गावत रस मय गान परम मन हरन रसाला ।।५८।।
तिन को वेग निहार लखन हारे अस जानत।
नृत्यत श्री मैथिली देखि अपने मन मानत ।।५९।।

गुह्यक देवन सुतनि नृत्य माला मन भावन।
जग छवि भई उदास परम छवि निरखि सुहावन ॥६०॥
भय उदास सब लोक सबनि की शोभा फीकी।
लगति सुछबि इन केर लखत अद्भुत अति नीकी ॥६१॥
मानत अति आश्चर्य सकल जे देखन हारे।
क्या पुष्पांजलि दिये पुष्प को ढेर सँवारे ॥६२॥
अथवा कलित सु कान्ति केर प्रगटेउ समूह वर।
नृत्य सु माला निरखि जगत लागत उदास तर ॥६३॥
इमि आनन्द स्वरूप अमल कीरति प्रिय पावन।
श्री मैथिली उदार मंजु मूरति मन भावन ॥६४॥
श्री मिथिलेशहिं सुखद सखिन को प्राण पियारी।
सब को क्लेश मिटाय सकल विधि करत सुखारी ॥६५॥
पिय दृग स्वर्ण समान ताहि चुम्बक सम कर्षण।
गुनशीला सर्वस्व मोर जीवन हिय हर्षण ॥६६॥
मेघ सदृश वर ललन श्याम सुन्दर सुशील तर।
"सीताशरण" अधार प्यार पूरक प्रमोद घर ॥६७॥
तिन सँग शोभित सीय स्वर्ण मेढ़ी सम सुन्दर।
मण्डलरास मझार लसत दम्पति सनेह भर ॥६८॥
कलित कमल सम लगत रास मण्डल मन भावन।
तामधि मधुप समान ललन विहरत प्रिय पावन ॥६९॥
तेहि की मणि कर्णिका केर देवी सम स्वामिनि।
विलसैं विविध विनोद वलित सब को अभिरामिनि ॥७०॥

Scanned by CamScanner

वर्णत सूत सुजान सुनो शौनक मुनीश वर।
जो पिय परम परेश निखिल ज्ञानिन प्रमोद कर ।।७१।।
परमहंस शिरमौर सबनि के हृदय रमण कर।
देत परम सुख स्वाद सबहिं सब विधि उदार तर ।।७२।।
जासु नाम सुख सिन्धु अखिल जग आनँद कारी।
रस सागर रसिकेश वन्यो सोइ रास विहारी ।।७३।।
सोउ परि नारी चक्र माहिं सब को रमाय रम।
लेत देत रस स्वाद स्वकीयन संग सु अनुपम ।।७४।।
नृत्यत सखि कर पकरि प्यार पगि प्रियन नचाई।
पावत परमानन्द प्रेम पूरित हर्षाई ।।७५।।
अस ज्ञानी तब कवन ब्रह्मवेता जग माहीं।
जो करि रास सुध्यान परम सुख पावत नाहीं ।।७६।।
सखियन चक्र समेत रसिक वर छवि जो ध्यावै।
निश्चय "सीताशरण" परम सुख सिन्धु समावे ।।७७।।
जे रसज्ञ जगमाहिं तिनहिं प्रिय यह चरित्र वर।
जे अतिसय अरसज्ञ कवन उन की चर्चा कर ।।७८।।
अखिलेश्वर सुख सदन मदन मद मथन सु छवि धर।
सब के परम उपास्य देव रघुराज कुँवर वर ।।७९।।
परम मधुर रस रास केलि कौतुक कलोल कर।
भोगत विविध प्रकार महा सुख स्वाद रसिक वर ।।८०।।
श्रेष्ठ उपासक वही सतत यह रस हिय ध्यावै।
सिय पिय रहस चरित्र गाय सुनि मोद समावै ।।८१।।

जब हृदयेश नवीन नृत्य वर कला दिखाई ।
लखि सब गुह्यक सुता कहहिं मृदु हँसि हर्षाई ॥८२॥
हे अवधेश किशोर परम चित चोर चतुर वर ।
हे हृदयेश उदार प्राण वल्लभ सुजान तर ॥८३॥
हे अनन्य जन सुखद भक्ति पर तन्त्र नेह घर ।
कीनो जो वर नृत्य आपने अनुपम सुन्दर ॥८४॥
तुम कहँ सहजहिं खेल हमनि कहँ अचरज दायक ।
हम तव पद अनुचरी रसिक वर तुम सब लायक ॥८५॥
तुम स्वतन्त्र सर्वेश भक्त हित नर तन धारत ।
जन रंजन हित सतत सरस तर कृत अनुसारत ॥८६॥
अपर निखिल जे ईश सबनि के भोग्य तिहारे ।
रहत सदा आधीन सुनिय हे नृपति दुलारे ॥८७॥
हम को दासी जानि चरण की आयसु दीजिय ।
करैं सकल मिलि नृत्य निरखि हिय में रस लीजिय ॥८८॥
पुष्पहु ते अति सरस नाथ तव तन मृदुताई ।
लखि तुम्हरे तन स्वेद हमनि से सहा न जाई ॥८९॥
हम सब को मन व्यथित भयो अतिसय हे प्यारे ।
यद्यपि तुम बलधाम श्याम सुन्दर मन हारे ॥९०॥
याते हे रसिकेश आप सब श्रम न उठाइय ।
करैं सकल हम नृत्य स्वाद लखि मन में पाइय ॥९१॥
हम सब की आतमा भोग्य सब भाँति तिहारी ।
जीवन धन सर्वस्व हमनि के रास विहारी ॥९२॥

हमरी विद्या बुद्धि देह वैभव तव लागी ।
है सब विधि हृदयेश स्वाद लीजिय रस पागी ।।९३।।
चक्रवर्ति नृप सुवन भुवन भूषण विनोद घर ।
सज्जन जन मन सुखद हेत अवतरेउ अवनि पर ।।९४।।
यद्यपि पिय तव नृत्य हमनि मन आनँद कारी ।
भक्त सुखद पिय सतत कृपा नित करत अपारी ।।९५।।
स्वजन सुखी जिमि होहिं करत लीला सोइ पावन ।
याते हम सब काहिं नृत्य कर हे मन भावन ।।९६।।
देना सुख रस स्वाद उचित तुम कहँ दे प्यारे ।
तुम रसेश सुख सिन्धु सकल गुण गण उजियारे ।।९७।।
हे पिय करिय विचार यदपि शिव ईश स्वतन्त्रा ।
तदपि भवानी प्रीति विवश नित बनि परतन्त्रा ।।९८।।
सन्मुख करि करि नृत्य करत उन के गुण गाना ।
यह प्रसिद्ध जग माहिं बखानत शास्त्र पुराना ।।९९।।
याते श्री मैथिली निकट तव नृत्य कार्य वर ।
'सीताशरण' सुजान सुनिय सब भाँति उचित तर ।।१००।।

दोहाः–प्रिया लहैं सन्तोष जिमि, होवैं सुखी अपार ।
गुनशीला कर्त्तव्य तव, सोइ हे प्राण अधार ।। ३ ।।

चक्रवर्ति नृप यथा सिंहासन बैठि नृपन को ।
सब विधि शासन करत कार्य करवावत मन को ।। १ ।।
सामराज्य संगीत केर तिमि तुम ही शाशक ।
तुम स्वतन्त्र सर्वेश सबनि हिय कमल विकाशक ।। २ ।।

जिमि सरितन आधार सिन्धु तिमि तुम हृदयेश्वर ।
सुठि सङ्गीत सु शास्त्र केर आधार सु छवि धर ॥ ३ ॥
सर्वलोक सङ्गीत केर गुण रूप कीर्ति वर ।
है तुम्हरे आधीन सकल विधि हे उदार तर ॥ ४ ॥
स्वामी विज्ञ महान आप ही हैं हे प्यारे ।
तुम को पाकर होत पूर्ण हे प्राण अधारे ॥ ५ ॥
चौदह भुवन मझार सकल सङ्गीत विज्ञ वर ।
सो तव अनुचर अहैं आप आचार्य सबन कर ॥ ६ ॥
यहि विधि कहि वर वचन गुह्यदेवन की बाला ।
करहिं प्रशंसा भूरि भाव भरि परम रसाला ॥ ७ ॥
सुनि लहि परमानन्द प्रेम पूरित प्राणेश्वर ।
सिंहासन आसीन भये रस निधि सर्वेश्वर ॥ ८ ॥
श्री मैथिली समेत मन्द हँसि गल भुज धारे ।
लखत महा रस रास प्राण प्रीतम सुकुमारे ॥ ९ ॥
नृत्यत प्रिय सहचरी भाव भूषित भल भाँती ।
गावहिं मृदुस्वर गीत मधुर मंजुल रस माती ॥ १० ॥
लखि लखि युगल किशोर वदन विधु मोद समाई ।
पावहिं अति सुख स्वाद युगलछबि हृदय बसाई ॥ ११ ॥
पुनि उठि श्री मैथिली रास मण्डल मधि जाई ।
गुह्यक देवकुमारि तिनहिं सिखवत हर्षाई ॥ १२ ॥
गीत सु मधुर गवाय नचावत सखिन मोद भर ।
लखि सुनि तिनको नृत्य गान सुठि सरल सरस तर ॥ १३ ॥

होकर परम प्रसन्न पिया सों अमल वसन वर ।
भूषण विविध प्रकार दिवावत सखिन नेह भर ॥१४॥
परम प्रकाश स्वरूप वसन भूषण अमोल वर ।
पाय सकल सहचरी प्यार पावीं विशेष तर ॥१५॥
तेहि क्षण श्री मैथिली अङ्ग की कान्ति कलित वर ।
अतिसय शोभित भई निरखि रसिकेश सु छवि धर ॥१६॥
मन में प्रगटेउ भाव अगर श्री प्राण पियारी ।
गावैं कछु मृदु गीत लहौ सुख स्वाद अपारी ॥१७॥
पिय की प्रिय कर परम सतत रुचि राखन हारी ।
पूरित प्रेम पियूष प्रिया पिय भाव विचारी ॥१८॥
तजि लज्जा संकोच गीत प्रिय सरस मधुर स्वर ।
गावहिं श्री मैथिली मंजु मूरति सु शील तर ॥१९॥
गीत वाद्य अरु नृत्य मर्म भल भेद दुलारी ।
जानहिं श्री मैथिली अपर को जानन हारी ॥२०॥
जिन सम अन्य न तिय पिया की प्राण अधारी ।
सब विधि "सीताशरण" सजीवन मूरि हमारी ॥२१॥
जेहि क्षण श्री मैथिली सरस प्रिय गान सुनायो ।
सुनि पिय परम प्रवीण अमित सुख रस हिय पायो ॥२२॥
परमानन्द विभोर देह की सुरति भुलाई ।
पाई दशा सुषुप्ति स्वाद अनुभवत अघाई ॥२३॥
जिन के शीश सहस्र शेष सोउ मुर्छा पाई ।
श्रवत चन्द्र ते सुधा नखत नभ विमल लखाई ॥२४॥

शीतल सरस सुगन्ध भरित प्रिय वायु मन्द तर।
चलन लगी जग माहिं सबहिं आनन्द मगन कर ॥२५॥
सरिता सब घृत, तेल, दूध मधु, द्राक्षासव रस।
और इक्षुरस,दही, आदि से भरित नेह बस ॥२६॥
महि पर जितने कुण्ड सकल पायस से पूरे।
कछुक शर्करा सदृश भरे कोऊ नहिं झूरे ॥२७॥
सागर तट पर विपुलरत्न मणि माणिक मोती।
प्रगटे परम प्रकाश वान जग मगति सु ज्योती ॥२८॥
गिरिवर जग के निखिल ललित वर धातु प्रगट कर।
परमानन्द प्रपूरि रहे हिय में प्रमोद भर ॥२९॥
तरु पादप अरु लता फूल फल फलित भार भर।
नमि नमि चुम्बत भूमि भाव भूषित कलोल कर ॥३०॥
ऋतु अरु कुऋतु विहाय विटप वर वेलि मुदित हिय।
निज मर्यादा त्यागि सुमन अरु फल धारण किय ॥३१॥
श्रवत स्वयं ही दुग्ध धेनु महिषी स्थन सों।
काष्ठ पुतलिका सदृश मुग्ध मानव निज मन सों ॥३२॥
सुर निज तियन समेत विविध विधि वाद्य बजाई।
सुनत लगाकर श्रवण गीत रस मय सुख पाई ॥३३॥
बर्षत सुमन अपार व्योम में नहिं अवकाशा।
पुष्प गन्ध से लुब्ध पुंज अलि भ्रमत अकाशा ॥३४॥
पुनि सुर शक्तिन सहित व्योम स्थित प्रसन्न मन।
राम प्रिया मैथिलिहिं सकल प्रणवत सनेह सन ॥३५॥

शुक, पिक, हंस, मयूर, सर्प, सारस श्वापद कर।
सिंह, व्याघ्र, गज, वृषभ, महिष, वृक, हृदय मोद भर ॥३६॥
वैर भाव बिसराय श्रवण पुट प्यार समाये।
गीतामृत रस पियत सकल अपनपौ भुलाये ॥३७॥
मिटे सकल भव रोग शोक आनन्द मगन मन।
चर अरु अचर विभोर भयो रस भरित रमावन ॥३८॥
श्री मैथिली मुखारविन्द निःश्रित सु गीत वर।
आनन्दित करि लोक विमल वैकुण्ठ भेद कर ॥३९॥
ऊपर पहुँचो जाय कहत तब सूत सुजाना।
शब्द गगन गुण अहै बखानत वेद पुराना ॥४०॥
पुनि मैथिली रसाग्र योग से भरित गीत वर।
सुन्दर सुधा समान भयो सब को प्रमोद कर ॥४१॥
सरस मनोहर सुप्रिय सुखद सुठि स्वाद भरित वर।
पिय हिंय आनँद दान प्रेम पूरित विशेष तर ॥४२॥
सुनि सो शब्द रसाल महेश्वर आदि सकल सुर।
जग में यावत प्राणि मात्र आनन्द हृदय भर ॥४३॥
अतिसय भये विभोर आत्म स्थित सुधि तन की।
सब विधि गये भुलाय भई स्थिर गति मन की ॥४४॥
आनँद मय वनि जगत सबहिं आनन्द डुबाई।
सो रस "सीताशरण" कवन कवि सकै बताई ॥४५॥
इमि त्रैलोक्य विमोह करन हारो सु गीत प्रिय।
सर्व दोष से शून्य सुनत रसिकेश मुदित हिय ॥४६॥

लै कर कंज सु वाल व्यजन प्यारी पर हँसि के ।
लागे प्रीतम करन प्यार पगि छवि रस फंसि के ।।४७।।
बोले रसमय बचन काम पूरक रसिक रसिकेश्वर ।
मदन मान मद मथन प्राण जीवन हृदयेश्वर ।।४८।।
हे प्राणाधिक प्रिये विमल बिधु बदनी सुख कर ।
पुष्पहु ते अति सरस परम कोमल सुगन्ध भर ।।४९।।
मधुर मंजु मन हरन नवल विग्रह तव प्यारी ।
इतना श्रम नहिं उचित तुमहिं मिथिलेश दुलारी ।।५०।।
पुनि यह गीत तुम्हार प्रेम रस नव संचारक ।
व्यामोहित सुनि जगत सकल को होय निवारक ।।५१।
यामें अस माधुर्य अपर में यहि सम नाहीं ।
श्रवण पुटन करि पान जाहि मुर्छित महि माहीं । ५२।।
गिरे विष्णु भगवान सके नहिं निजहिं सँवारी ।
रही न तन सामर्थ उमा युत श्री त्रिपुरारी ।।५३।।
ब्रह्माणी युत ब्रह्म देव अरु अपर सकल सुर ।
निज निज शक्तिन सहित गिरे मुर्छित अवनी पर ।।५४।।
अन्य आप से और अहैं जहँ लगि नर नारी ।
सो सब सुनि वर गीत देह की सुरति बिसारी । ५५।।
मुर्छित महि पर गिरे गीत माधुर्य पान कर ।
इस में क्या आश्चर्य आप रस मूर्ति मधुर तर ।।५६।।
तव सु कण्ठ से प्रगट भये जो गीत सरस तर ।
सो पर ब्रह्म स्वरूप लखो मन में बिचार कर ।।५७।।

कोइ संसारी जीव नहीं या को अधिकारी ।
कटु निंबाश्रयण किये कीट सम तुमहिं बिसारी ।।५८।।
सेवत बिषय बिबर्त मोह अज्ञान बिबश अति ।
सो तव गीत रसाल सुधा किमि चखै मन्द मति ।।५९।।
सब प्रकार असमर्थ यही ते सकल चराचर ।
देह दशा बिसराय मुर्छि कर गिरे अवनि पर ।६०।।
और कौन की कहैं आप की नित्य सखी गन ।
सेवत सन्तत चरण विज्ञ तम अति उदार मन ।।६१।।
तव ऐश्वर्य महान भली बिधि ये सब जाने ।
सोउ बिन चेष्टा भई अपनपौ सकल भुलाने ।।६२।।
सब विदेह हो रहीं मनहुँ लगि गई समाधी ।
भूलीं क्रिया कलोल सकल मिट गई उपाधी ।।६३।।
जिमि जग के सब जीव चेष्टा हीन निहारी ।
वैसी ही ये सखी प्रिया जू लगत तिहारी ।।६४।।
हे मधुरांगिनि देवि स्वयं हम मुर्छा पाई ।
किन्तु रावरी दया मूर्छा विगत बनाई ।।६५।।
तब हम भये सचेत बचन इमि बदत प्रिया से ।
अमृत मय वर गीत प्रशंसत वाहि हिया से ।।६६।।
जग में जितने गीत सबनि में यहि नृप जानी ।
करत प्रशंसा भूरि भाव भरि अति सन मानी ।।६७।।
पुनि पिय को प्रिय सुखद रास रस दानि सयानी ।
सुर सुरभी सम सुभग राजनन्दन पटरानी ।।६८।।

पिय की जीवन मूरि मैथिली रूप उजारी ।
सुख सुषमा आगार मधुर तर अवनि कुमारी ॥६९॥
प्रीतम की सुठि गोद रूप सम्राट सिंहासन ।
पिय रुचि राखन हेत मन्द हँसि बैठीं मुद मन ॥७०॥
जय मिथिलाधिप लली बन्द कर गीत सुहावन ।
बैठीं पिय की गोद माहिं सुख रस सरसावन ॥७१॥
तब सब गुह्यक सुता प्रिया कृत सुनि सु गीत वर ।
हिय लहि परमानन्द भरीं उन्माद अधिक तर ॥७२॥
वासे हो उपराम बिहँग सम सुभग बोल प्रिय ।
बोलन लागीं सकल प्रेम पूरित उदार हिय ॥७३॥
बिबिध प्रकार सु पच्छि सरिस सुठि सरस शब्द वर ।
बोलहिं बहु वर वाम बदन बिधु सम प्रकाश कर ॥७४॥
पुनि तजि छिति सब वाल व्योम मधि नृत्यन लागीं ।
बिन कर वाद्य बजाय परम प्रेमामृत पागीं ॥७५॥
कोकिल सम कल गान कण्ठ बिन करहिं सयानी ।
हो अदृष्य सुख पाय सकल रस रङ्ग समानी ॥७६॥
परम तेजमय पुंज सरस प्रिय अमल प्रकाशा ।
भरीं नवल उत्साह सबनि हिय कमल विकाशा ॥७६॥
पूरित प्रेम पियूष परम रमणी नवीन वय ।
विलसैं बिपुल बिनोद वलित करि केलि सु रसमय ॥७८॥
पिय सँग रमि सब सखी बिबिधि विधि पियहिं रमायो ।
पायो परमानन्द स्वाद प्रीतमहिं चखायो ॥७९॥

पुनि कल कमल समान सरस सौरभ सु अङ्ग मय ।
सब गुह्यक सुर सुता रँगीं रति रमण रङ्गमय ॥८०॥
कहुँ प्रविशैं जल माहिं कदा वर बिटप समावैं ।
करहिं रहसमय गान प्राण वल्लभहिं रिझावैं ॥८१॥
यहि बिधि चर्चहिं चतुर चपल चूड़ामणि पिय को ।
वर्णत सूत सुजान भाव लखि पिय के हिय को ॥८२॥
हे शौनक मुनिवर्य मैथिली सङ्ग सखिन युत ।
स्वजन सुखद रसिकेश रमत क्रीड़ा करि अद्भुत ॥८३॥
रूप अनूप उदार काम मद मर्दन मन हर ।
कामामृत की करत मेघ सम बर्षा शुचि तर ॥८४॥
सङ्गीतामृत पियत सखिन मुख निगदित पावन ।
पान करत माधुरी सु छबि तिन की मन भावन ॥८५॥
किन्तु न मानत तृप्ति तृप्त नहिं होत रसिक वर ।
प्रगटति नव नव प्यास प्रीति रस पगे सु छबि धर ॥८६॥
इमि रबि सरिस महान तेज ऐश्वर्य वान प्रभु ।
पूज्यनीय परमीश परम पर तत्व विमल विभु ॥८७॥
निज सर्वस्व विचारि प्राण प्यारी सिय काहीं ।
सकल कला सम्पन्न पूर्ण श्री गुनि मनमाहीं ॥८८॥
विपुल विशद बिधु बदनि बालबिच वलित विनोदा ।
विलसत बिबिध प्रकार रसिक मणि पावत मोदा ॥८९॥
गुनातीत गुनगेह अगम अच्युत अपार अति ।
अलि आलिङ्गन सुमुख चुम्बत सुजान मति ॥९०॥

मर्दत सरस उरोज अधर रस पियत प्यार भर ।
करि कटाक्ष कमनीय मन्द हँसि हँसि लगि लगि गर ।।६१।।
सरस सुधा से अधिक स्वाद अनुभवत नृपति सुत ।
निज ऐश्वर्य भुलाय मधुर रस पगे प्रेम युत ।।६२
पाय सखिन स्पर्श शान्त चित अति कोमल हिय ।
निज प्रभुता विसराय अलिन सँग सरस केलि किय ।।६३।।
जेष्ठ मास में यथा भानु अति तीक्षण लागत ।
पूस मास को पाय वही दक्षिण दिशि भागत ।।६४।।
तब तीक्षणता त्यागि परम शीतलता धारत ।
यद्यपि सब जग माहिं आपनी किरण पसारत ।।६५।।
तिमि जीवन धन लाल रसिक चूड़ामणि छबि धर ।
निज प्राणन की प्राण प्रेम मूरति उदार तर ।।६६।।
पाकर श्री मैथिलिहिं प्रवीण सर्व कला युत ।
सम्पन्ना श्री सकल बिपुल बनिता अति अद्भुत ।।६७।।
बिहरत तिन के मध्य शब्द स्पर्श रूप रस ।
पीवत प्रेम पियूष प्रेम पूरक अति रति बस ।।६८।।
ऊष्णता ऐश्वर्य वाहि सब भाँति भुलाई ।
रमत रसिक शिर मौर राजनन्दन रघुराई ।।६९।।
रमि रमाय चित चाय सखिन युत रूप रँगीले ।
श्री मैथिली समेत सिंहासन लसत छबीले ।।१००।।

दो०:—इमि अलि अवलि समेत पिय, पगे प्रेम रस रङ्ग ।
विलसत "सीताशरण" अति, जनक लली के सङ्ग ।। ३ ।।

❀ मकरार्के यक्ष कन्या रास प्रकरणम् ❀

छन्दरोला :-

मकर राशि गत भानु भये तब मदन महाना ।
दुख मान्यो मन माहिं भानु मम कृत अपमाना ॥ १ ॥
मेरो वाहन मकर छीनि रवि कीन सवारी ।
याते हे मन छुधित गयो जहँ रास विहारी ॥ २ ॥
बिन बाहन चलि पावँ सर्व बिश्राम प्रदाता ।
सर्व शरण्य उदार जहाँ आरत जन त्राता ॥ ३ ॥
अखिल लोक अभिराम राम की शरण सिधारो ।
हाथ जोरि शिर नाय कहत इमि काम बिचारो ॥ ४ ॥
हे आश्रित जन सुखद भानु मम बाहन छीनी ।
मो कहँ आँख दिखाय सबारी अपनी कीनी ॥ ५ ॥
सुनि बोले श्रीराम सकल सुखधाम ज्ञान घन ।
रूप रसिक चित चोर मन्द हँसि अति प्रसन्न मन ॥ ६ ॥
ऐ मन्मथ मत डरो त्यागि भय होहु मुदित हिय ।
अस कहि दया समुद्र कृपामय मूर्ति यत्न किय ॥ ७ ॥
चक्रवर्ति नृप कुँवर ललित आजान बाहु वर ।
परम सुहृद बलवान महात्मा अति सु शील तर ॥ ८ ॥
करि के कृपा अपार भानु से मकर सु वाहन ।
मदनहिं दीन दिवाय लह्यो तब काम मोद मन ॥ ९ ॥
कहा मदन कर जोर स्वामि तुम अरु मैं दासा ।
कीनी मोपर कृपा परम हे कृपा निवासा ॥१०॥

तव सेवा सब भाँति करव यह धर्म हमारा ।
याते करके कृपा आप कीजिय स्वीकारा ॥११॥
श्री मैथिली समेत बिबिध बिधि रास बिलासा ।
दीर्घ काल तक करिय धारि हिय परम हुलासा ॥१२॥
सीत काल की रैन बड़ीं हैं सब सुख दायक ।
रमिये सब विधि आप सखिन सँग तुम सब लायक ॥१३॥
इमि मन्मथ की विनय श्रवत करि राजिव लोचन ।
विहरन की रुचि कीन प्रगट सब सोच विमोचन ॥१४॥
श्री मैथिली सनेह सुधा छाके रसिकेश्वर ।
सिय रुचि वर्द्धन हेत कीन कौतुक हृदयेश्वर ॥१५॥
जेहि से अति रस वढ़ै पड़ै प्रति बन्ध न यामै ।
कीनी सोइ कल केलि कलित कोमल करुणामै ॥१६॥
उत्सव वर्द्धन हेत निशा को राजकुँवर बर ।
यत्त कुमारिन हृदय माहिं अति रुचि दीनी भर ॥१७॥
वे सोचहिं मनमाहिं कदा अवसर हम पइहैं ।
सेवा करि हम सकल प्रिया प्रीतमहिं रिझइहैं ॥१८॥
करहिं प्रतीक्षा प्रवल मनहूँ रसयज्ञ करन हित ।
वैठीं दीक्षा लिये प्रेम पूरित प्रमुदित चित ॥१९॥
गीत वाद्य सङ्गीत कला कुशला प्रवीण अति ।
सहज सुरति रस विज्ञ नवल नायिका विमल मति ॥२०॥
लखि उनकी रुचि प्रवल प्रेम पूरक प्रिय नागर ।
रास करन हित दीन हरषि आज्ञा रस सागर ॥२१॥

पुनि तिन सब के संग रमण रति रस स्वादन हित।
शोभित भये विशेष श्याम सुन्दर उदार मति ॥२२॥
पिय की आज्ञा पाय यज्ञ कन्या हर्षानी।
हिय लहि परमानन्द बन्दि पद कंज सयानी ॥२३॥
भूषण बसन अपूर्व दिव्य निज अङ्ग सजाई।
अङ्गराग तन लेपि ललित छबि छटा छकाई ॥२४॥
अमल आभरण सु तन माहिं जगमगत झलामल।
परम प्रभा प्रगटाय प्यार पूरित शोभित भल ॥२५॥
रत्न खचित अति दिव्य रास स्थली विशाला।
प्रमुदित कीन प्रवेश विमल बिधु बदनी बाला ॥२६॥
सोथल परम प्रकाश पुंज मणि माणिक शोभित।
दिव्य सुगन्धित भरित मधुप गुंजत अति लोभित ॥२७॥
दिव्य धूप की धूम सकल मण्डप में छाई।
लपटत लता ललाम द्वार पर परम सुहाई ॥२८॥
तन्यो बितान महान लगीं मुक्तन की झालर।
लटकत लसत अनूप प्रभा पूरित प्रकाश कर ॥२९॥
मण्डप केर प्रकाश पुंज की ज्योति विमल तर।
पूरि रही बन माहिं मधुर मंजुल शीतल वर ॥३०॥
यदपि शरद को समय तदपि तहँ शीत न लागत।
सतचित आनँद रूप परम रस निधि हिय जागत ॥३१॥
बिछे असतरण दिव्य बिमल वर बिपुल विचित्रा।
विलसत बिबिध प्रकार सुभग मन हरन पवित्रा ॥३२॥

रमा केलि बन नाम तथा गुण परत दिखाई।
लक्ष्मी क्रीड़ा केर सु प्राङ्गण सम दर्शाई ॥३३॥
सकल नायिकन मध्य नवल नायक दिव्यासन।
बिलसत वर बिधु वदनि प्रिया संयुक्त मुदित मन ॥३४॥
चहुँदिशि सेवत बिपुल राज कन्या सुकुमारी।
पहिरे पीत सु वस्त्र अमल अनुपम मनहारी ॥३५॥
मैं सब की स्वामिनी सकल ये मेरी दासी।
अस सोचत मन माहिं पिया प्रेमामृत प्यासी ॥३६॥
शोभित श्री मैथिली स्वकीया मान समानी।
पीन पयोधर प्रिया पिया की प्रिय पटरानी ॥३७॥
प्रीतम प्रेम पियूष पली पी आसव पिय कर।
अचल दृष्टि हो रहीं प्रेम पूरित सुशील तर ॥३८॥
प्राणेश्वर पगि प्रीति प्रिया को पियत अधर रस।
कर्ण फूल अति लसत ललित लोलित अति रस बस ॥३९॥
स्वर्ण रचित वर कमल लिये कर कंज दुलारी।
पगीं पिया के प्यार मन्द हँसि हँसि सुकुमारी ॥४०॥
दीने पिय गल बाहँ प्रेम पण्डिता सयानी।
दृग सों दृगन मिलाय मंजु मूरति रस सानी ॥४१॥
तैसेइ यक्ष कुमारि नृत्य की कला कुशल वर।
रहित लाज संकोच पिया छबि रस अति पीकर ॥४२॥
रूप अनूप अपार मधुर मंजुल मूरति वर।
जीवन धन रसिकेश प्राण वल्लभ सुषमाकर ॥४३॥

यक्षकुमारिन मुदित बिबिध वर वाद्य बजाई ।
गावत गीत रसाल मधुर तर हिय हर्षाई ॥४४॥
दम्पति प्रिय कर सुखद सरस सङ्गीत सुहावन ।
कीनो सखियन प्रगट परम सुन्दर मन भावन ॥४५॥
गावहिं बिबिध सु राग तान लै लै अलाप वर ।
सुन्दर तर मल्लार और जयताल सरस तर ॥४६॥
नाटय और कल्याण सुहावन प्रिय हमीर सुचि ।
भूपालिका रसाल मोद शीतादि सुनत रुचि ॥४७॥
उपजत अतिमन माहिं सुभग काफी ईमन वर ।
सुठि कान्हरा अपार राग प्रगटैं प्रमोद भर ॥४८॥
यक्ष कुमारी सकल प्रिया प्रीतम रँग रँगि के ।
सुठि सौन्दर्य गुणादि गीत गावहिं रस पगि के ॥४९॥
पूरित प्रेम पियूष सुनत सो राग मनोहर ।
सब कोइ होत अचेत चेत विसरावत तन कर ॥५०॥
और कवन की कहौं मदन जो सब जग मोहत ।
सोऊ मुर्छित परेउ अवनि पर अलि गण जोहत ॥५१॥
दम्पति परिकर सहित चेत युत अपर न कोई ।
जो सुनि यह वर गीत होश निज देइ न खोई ॥५२॥
पिय प्यारी सर्वदा एक रस रहत सखिन युत ।
करत केलि कमनीय प्रेम पागे अति अद्भुत ॥५३॥
याते इन को छोड़ि अपर जिन सुन्यो गीत वर ।
सो सब मुर्छित भये चेत बिसराय देह कर ॥५४॥

यन्नसुतनि के संग काम नारी रति मिलकर।
गावन लागी गीत सरस मनहरन मधुरतर ॥५५॥
जगत्मात्र के नाथ राम अभिराम प्रदायक।
तिनके गुण अनुभाव्य मोद मन्दिर सब लायक ॥५६॥
श्रीरघुवंश किशोर परम चित चोर ललन कर।
रूप शील गुण भरित गीत गावहिं उमङ्ग भर ॥५७॥
सुनि तिन को यह गीत मुदित मन श्री मति क्षेमा।
मृगलोचना उदार रूप शोभित श्री हेमा ॥५८॥
पद्मा प्रेमस्वरूप सुभग तन श्री मति चन्द्रा।
विलसत श्रीमति चन्द्रकला विमला सुख कन्दा ॥५९॥
ये सब सखी सयानि उमगि हिय गावन लागीं।
पीवत युगल किशोर सु छबि रस अति सुख पागीं ॥६०॥
सरस्वती तब लख्यो होत सुठि सरस रास वर।
जेहि में युगल किशोर केर सहचरी मुदित उर ॥६१॥
गावत रसमय गान तान मन हरन मधुर तर।
लै वीणा कर कंज गईं मण्डल में मुद भर ॥६२॥
सब सखियन के मध्य माहिं सखिकेर बहाने।
लगीं बजावन वीण मधुर स्वर हिय सरसाने ॥६३॥
उनकी प्रिय सहचरी बजावत वंशी मन हर।
मार्ग गतादिक भेद विपुल विधि प्रगटत सुख कर ॥६४॥
मुर्छा गत जब भयो मदन तब मन पछिताई।
हम हीं वंचित रहे रास अद्भुत सुख दाई ॥६५॥

अस बिचारि मन माहिं सकल संकोच बिहाई ।
लियो स्वतन्त्र मृदङ्ग बजावत मोद समाई ।।६६।।
जब देखे श्रीराम परम अभिराम काम हर ।
जासु छटा लवलेश काम प्रगटत अनन्त वर ।।६७।।
लखि मदनै इमि कहा अरे यह रास अनूपम् ।
कवन मदन को काम स्वयं यह अति रस रूपम् ।।६८।।
याते करि संकेत बिना श्रम काम हटायो ।
कोटि काम कमनीय स्वयं रस रङ्ग बढ़ायो ।।६९।।
लखि यह रास अनूप अमल अद्भुत प्रिय पावन ।
सुर बनितन मन माहिं परम लालच उपजावन ।।७०।।
जाना चाहैं सकल सुरन रोका बरियाई ।
तदपि न वे रुक सकीं गईं निज वेष छिपाई ।।७१।।
दूसर रूप बनाय रास मण्डप में जाई ।
पुष्प सु भूषण बिरचि पिया के तन पहिराई ।।७२।।
जब शचि जाना चहे इन्द्र तब कहा पुकारी ।
मैं त्रिभुवन को नाथ कहावति सु तिय हमारी ।।७३।।
चक्रवर्ति नृप कुँवर अभी बालक फिर वे नर ।
हम में अरु उन माहिं होय केहि बिधि से सर वर ।।७४।।
मानव दास समान सदा देवन के जानो ।
तिन की दासिन माहिं रहब तुमने सुख मानो ।।७५।।
रहि तिन सब के बीच अगर तुम सुनहु गीत प्रिय ।
देखोगी सुठि नृत्य बिचारो तो अपने हिय ।।७६।।

क्या तुमको यह उचित सुनत करिहैं सब निन्दा ।
जनि जाओ तेहि ठाँव दिहौं में सब आनन्दा ॥७७॥
कहा इन्द्र बहु भाँति किन्तु शचि एक न मानी ।
बिरचि मयूरी वेष रास मण्डप रस सानी ॥७८॥
गमनी प्रेम समेत निरखि रघुवर प्रिय मूरति ।
पायो परमानन्द प्यार पगि अनुपम सूरति ॥७९॥
जब सब देवन केर तियाँ निज रूप छिपाई ।
राम रास में गईं निरखि छवि आनँद पाई ॥८०॥
तब मिल कर सब देव बृहस्पति निकट सिधाये ।
सादर वन्दे चरण बहुरि बूझत शिर नाये ॥८१॥
हे गुरु देव सुजान देव वन्दित उदार अति ।
कहिये कृपा निधान आप सर्वज्ञ विमल मति ॥८२॥
हम सब की स्त्रियाँ हमहिं तजि भूमि सिधारीं ।
कारण कवन विशेष बिमोहीं क्यों सब नारीं ॥८३॥
चक्रवर्ति नृप कुँवर यदपि सुन्दर श्रीरामा ।
सुषमागार उदार अखिल लोकन अभिरामा ॥८४॥
तद्यपि हम सब देव सकल मानव ममदासा ।
चर्चित हमरे चरण मानि मन माहिं हुलासा ॥८५॥
हमरी कृपा प्रसाद लहत वे सब सुखस्वादा ।
जग पालक सुर निकर देत सब को अह्लादा ॥८६॥
जैसे मानव अन्य तथा श्रीराम रसिक वर ।
तब बिशेषता कवन कहिय करुणेश कृपा कर ॥८७॥

सुनि देवन को प्रश्न मन्द हँसि सुर गुरु बोले ।
बानी विमल विशेष मधुर प्रेमामृत घोले ॥८८॥
सुनौ सुरन समुदाय श्याम सुन्दर श्रीरामा ।
चक्रवर्ति नृप कुँवर यदपि फिर भी सुखधामा ॥८९॥
परब्रह्म पर तत्व सर्व उर अन्तर यामी ।
परतर परम परेश प्रेम पूरित जग स्वामी ॥९०॥
प्रेमिन प्राणाधार प्रेम पूरक प्रमोद कर ।
पीवत प्रेम पियूष परम प्रतिभा कर शुचि उर ॥९१॥
लखि उनको वर रास गईं तुम सब की नारी ।
अचरज यामें कवन कहो अब तुम्हीं विचारी ॥९२॥
कीजै पिछली सुरति राजसुय यज्ञ चन्द्र जब ।
कीना था एक बार निमन्त्रण दियो सुरन तब ॥९३॥
निज नारिन के सङ्ग सकल सुर तहाँ सिधारे ।
स्वागत कीना चन्द्र पाय सब भये सुखारे ॥९४॥
जुरी सुरन की सभा चन्द्र छवि लखि सब नारी ।
काम विमोहित भईं छोभ पायो मन भारी ॥९५॥
तब तुम करो विचार राम रघुवंश कुँवर वर ।
अखिल भुवन के नाथ प्रेम पूरक प्रमोद कर ।९६॥
परमानन्द स्वरूप सरस सौन्दर्य सु सागर ।
सतत प्रेम पर तन्त्र स्वजन रंजन नव नागर ॥९७॥
तिनके रास मझार गईं तुम सब की नारी ।
गुनि अपने बड़ भाग हृदय में होहु सुखारी ॥९८॥

जाना उनको उचित भलो कृत उनने कीना।
तुम्हरेहिं मन में मोह मनुज जग नाथहिं चीना ॥९९॥
वे बड़भागी परम सकल जिन प्रभु पद सेवन।
कीने सहित सनेह दुखी तुम होवत निज मन ॥१००॥

दोहा—बड़भागी सोई सुखी, जाको प्रभु पद प्रेम।
वन्दत सीताशरण तेहि, तेहि की नित नव क्षेम ॥ ४ ॥

तुम्हरो यही अभाग मनुज जनि मानहु रामहिं।
चिदानन्द मय देह धरे जानहु सुख धामहिं ॥ १ ॥
नित अनन्य जन सुखद राम रसिकेश सुघर वर।
हरत सकल अघ काम काम पूरक उदार तर ॥ २ ॥
यद्यपि आश्रित सुखद तदपि पर तन्त्र प्रिया के।
श्री मैथिली सनेह सुधा पी विवश सिया के ॥ ३ ॥
सन्तत रहत रसेश राजनन्दन मन रंजन।
यदपि सर्व सामर्थ स्वजन रक्षक भव भंजन ॥ ४ ॥
तदपि अपर तिय सङ्ग अङ्ग को करत न रघुवर।
केवल श्री मैथिली सुकर मन दियो मुदित उर ॥ ५ ॥
परकीया रति रमण करत कबहूँ नहिं छवि धर।
रमत स्वकीयन सङ्ग रङ्ग रँगि रास रसिक वर ॥ ६ ॥
याते तुम जनि डरो गईं तुम सब की नारी।
पी माधुर्य महान सुधा हो परम सुखारी ॥ ७ ॥
निज मन माहिं मनोर्थ मंजु मन्मथ की ज्वाला।
देइहैं वाहि बुझाय निरखि प्रिय रूप रसाला ॥ ८ ॥

यदि कोई कामिनी मिथुनु को भाव राखि उर।
जावै रघुवर निकट करै वर विनय जोरि कर ॥ ९ ॥
तो भी वाको अङ्ग सङ्ग नहिं करत सिया वर।
रसमय पूरित प्रेम दृष्टि हँसि देत सु छविघर ॥१०॥
सो कामिनी पी सु छबि हँसि हेरनि बाँकी।
सब बिधि मानि कृतार्थ निजहिं लखि मंजुल झाँकी ॥११॥
होवति पूरण काम काम बासना मिटावति।
बिन मैथुन ही किये हृदय में अति सुख पावति ॥१२॥
रूप माधुरी पान करत सन्तोष होत जिय।
उठति न कोइ बासना प्रेम रस भरत जबहिं हिय ॥१३॥
यदपि अङ्ग संयोग केर कामना प्रथम उर।
होवति परम विशेष किन्तु माधुरी पान कर ॥१४॥
होवत अति सन्तोष विनासत सकल बिकारा।
पूर्ण मनोरथ होय लहत सुख स्वाद अपारा ॥१५॥
लखि निज को सौन्दर्य परम अद्भुत अनूप वर।
पुरुष त्यागि पुरुषत्व प्रेयसी भाव हृदय भर ॥१६॥
सेवन करना चहत राम रघुवीर कुँवर को।
तो मोहीं सुर वाम निरखि यदि रूप मधुर को ॥१७॥
यामे क्या आश्चर्य कवन अनुचित अति भारी।
राम सच्चिदानन्द कन्द बैर बश मन हारी ॥१८॥
वर्णत जाको वेद ब्रह्म रस रूप उदारा।
सोइ निज भक्तन सुखद हेतु लै नर अवतारा ॥१९॥

करत सु केलि कलोल स्वजन मन रजंत प्रमुदित ।
देत परम सुख स्वाद सबहिं अतिसय उदार चित ॥२०॥
सुर गुरु जब यहि भाँति सकल देवन समझायो ।
तिन को संसय गयो मोद अपने उर पायो ॥२१॥
इधर परम कमनीय रास मण्डल में रघुवर ।
प्रेमिन सुख दातार प्रेम लम्पट सुषमाकर ॥२२॥
रुचिरासन पर लसत सखिन रुचि रखन हेत पिय ।
मृदु हँसि हेरत सबहिं भरत नव नेह अमल हिय ॥२३॥
निज माधुर्यानन्द रूप गुण गण को स्वादा ।
देवत रसिक नरेश श्याम सुन्दर अह्लादा ॥२४॥
प्रेमिन हित प्राणेश नवल नायक छबि आगर ।
प्रेमी तद्वत होत करत क्रीड़ा सुख सागर ॥२५॥
जस जस प्रेमी चहै आप तस भाव जनावत ।
जन को प्रेम विभोर निरखि बिह्वल हो जावत ॥२६॥
बालक जिमि करि केलि स्वजन निज करत सुखारी ।
जिमि प्रेमी सुख लहे वही लीला बिस्तारी ॥२७॥
देवत वाको स्वाद चेष्टा बिबिध भाँति कर ।
निज ऐश्वर्य भुलाय जनहिं सुख देत अधिक तर ॥२८॥
जिमि कोइ तजि सङ्कोच सुशिशु से प्रेम बढ़ावै ।
तो वह भी भरि प्यार परम मुग्धता जनावै ॥२९॥
भय सङ्कोच विहाय गोद चढ़ि बालक लीला ।
करै सनेह समेत मोद युत परम रसीला ॥३०॥

निज अँग के आभरण स्वयं दे देइ उतारी।
मानत नहीं ममत्व काहु में होत सुखारी ॥३१॥
यदि कोइ बालक काहिं डाँटि के आँख दिखावै।
फिर न जाय तेहि पास चहे जितना दुलरावै ॥३२॥
शिशु को लाड़ लगाय वस्तु जो वाके पासा।
लेवै तो दे देइ' नहीं मन करत उदासा ॥३३॥
यदि कोइ आँख दिखाय वस्तु कछु लेवै वाकी।
तो रोवै खिसियाय डरै लखि सूरति ताकी ॥३४॥
जो करि प्यार दुलार वस्तु कछु देय पवाई।
वापर सर्वस वारि तासु वश रहत सदाई ॥३५॥
वाको देखत मात्र मोद मन में अति पावै।
जो कोई भरि भाव बालकन लाड़ लड़ावै ॥३६॥
ऐसेहिं जो जन त्यागि लाज सङ्कोच शोक दुख।
सेवा करै सिहाय लहे रस स्वाद अमल सुख ॥३७॥
वंशोचित निज कार्य त्यागि प्रेमिन हित रघुवर।
करत मनोरथ पूर्ण तासु सब विधि सुषमा कर ॥३८॥
ऐसे श्री रघुवीर बजावत वीण निहारी।
सरस्वतिहिं रसिकेश रमण रति रास विहारी ॥३९॥
निज गुण रूप उदार विवस लखि प्रेम विभोरी।
गावत तजि सङ्कोच लाज अतिसय रस बोरी ॥४०॥
पुनि वंशी सु मृदङ्ग आदि बहु वाद्य मधुर तर।
सुधा सरिस प्रिय शव्द श्रवण करि रूप उजागर ॥४१॥

पुनि अतिसय अनुराग भरित सब यक्ष कुमारी ।
पिय की आश्रय भूत मंजु मूरति मन हारी ॥४२॥
लखि तिनकी सुठि भाव नम्र विनती सुनि काना ।
नटवर वेष सजाय नवल नायक मति माना ॥४३॥
लखि उत्तम गन्धर्व राज जिन को मन मोहैं ।
अमल आभरण दिव्य भव्य अङ्गन में सोहैं ॥४४॥
नृत्य गान वर कला कुशल करि कलित केलि वर ।
प्रेमिन प्रेम पियूष दान परमीश मोद कर ॥४५॥
सिंहासन से उतरि रास मण्डल में आये ।
चाहत करन विहार विशद हिय मोद समाये ॥४६॥
तब देखे सुर तियन श्याम सुन्दर रघुनन्दन ।
अति आश्चर्य स्वरूप महामधुराङ्ग निरंजन ।४७॥
जग में जो सुकुमार सबन के नृपति मधुर तर ।
तब सब देवन नारि हृदय में अति उमंग भर ॥४८॥
रासस्थल में गईं मदनसर व्यथित प्रेम भर ।
लखि रसिकेश स्वरूप विमोहित भईं अधिक तर ॥४६॥
याते रघुवर सङ्ग करन हित रास विहारा ।
रति उमङ्ग सर्वाङ्ग उठति बहु भाँति अपारा ।५०॥
उनको रोकै कौन जाय सब रास मझारी ।
नृत्यन गावन लगीं लहैं सुख स्वाद अपारी ॥५१॥
निज मन करैं विचार यदपि हम सुरन सु वामा ।
ये नर राजकुमार तदपि ऐसो अभिरामा ॥५२॥

कीनी विविध बिहार सुरन संग कबहुँ न पायो ।
जैसो परमानन्द कन्द रसिकेश चखायो ॥५३॥
पर इनको सुख स्वाद स्वार्थी सुरन न भायो ।
रास करत लखि तियन हृदय में अति दुख पायो ॥५४॥
चढ़ि विमान सब गये जहाँ रसिकेश सुघर वर ।
करत महा रस रास रमन परिकर प्रमोद कर ॥५५॥
निज निज तियन बुलाय बहुत समुझाय डाँट कर ।
बर बश यान चढ़ाय गये निज धाम मोद भर ॥५६॥
पर श्रीराम वियोग तिनहिं अति दुखद महाना ।
व्यापत बिषम वियोग छुटन चाहत जनु प्राना ॥५७॥
पर अति क्रूर स्वभाव देव मन होत सुखारी ।
समुझावहिं निज तियन वृथा जनि होउ दुखारी ॥५८॥
जब देखा रघुवीर देव ले ले निज नारी ।
गमने निज निज धाम हृदय पावत सुख भारी ॥५९॥
हिय हर्षित रसिकेश योगबल करि विस्तारा ।
प्रगटीं विपुल सु वाम नवल मन हरन उदारा ॥६०॥
जेती सुर तिय रहीं तासु दुगुणी वर नारी ।
रूप अनूप सु शील बुद्धि गुण गण उजियारी ॥६१॥
सुर नारिन ते दु गुण कान्ति कमनीय सरसता ।
मुदित सु मुख दृग कंज मंजु रस भरे बिमलता ॥६२॥
यक्षसुतनि से अधिक परम सौन्दर्य सुमूरति ।
अति विनीत मधुराङ्ग वतीं रस मय प्रिय सूरति ॥६३॥

तिन तन केर सु प्रभा रास मण्डल में छाई।
अतिसय शोभा बढ़ी एक मुख को कह गाई ॥६४॥
वे भी पिय छबि निरखि हृदय में आनँद पावहिं।
शोभित मण्डल माहिं राग की चाह जनावहिं ॥६५॥
तथा रास रस रसिक रमणरति करन हेत पिय।
उन नव सखियन ओर अधिक आकर्षित हँसि हिय ॥६६॥
पूरक सब विधि काम काम हर कोटि काम मम।
सुषमागार उदार प्रेम पूरित अति अनुपम ॥६७॥
पूर्ण मनोरथ करन हेत तिन को रसिकेश्वर।
लगे चेष्टा करन परम प्रमुदित उमङ्ग भर ॥६८॥
निज सु मनोरथ प्रगट करन लागे रघुराई।
मधुर मंजु मुसुकाय नयन की सैन चलाई ॥६९॥
एक भोक्ता प्रवल आप ही सब जग माहीं।
अन्य भोक्ता जिते एकहू तव मम नाहीं ॥७०॥
जो भोक्ता जग माहिं अपर सोउ भोग्य तिहारे।
सब के भोक्ता एक राम अवधेश दुलारे ॥७१॥
लखि यह लीला ललित श्रेष्ठतम जो मुनि नायक।
जिनकी कीरति विशद लोक में जो सब लायक ॥७२॥
अष्ट सिद्धि नव निद्धि रहें जिनके कर में नित।
सोऊ लखि रघुवीर सरस सौन्दर्य सरल चित ॥७३॥
बिन मथ गये बिकाय पुरुष पन भाव भुलाई।
धरि वामा वर वेष चहत रति रमण सोहाई ॥७४॥

यक्ष सुता जेहि भाँति पिया सँग भरी प्रमोदा।
हँसि आलिङ्गन करहिं विविध विधि पगीं विनोदा ॥७५॥
गावहिं रसमय गान पिया के गरभुज धरि के।
नृत्यैं पिय के सङ्ग रङ्ग रँगि आनँद भरि के ॥७६॥
करैं अधर रस पान कण्ठ लगि प्यार बढ़ाई।
चूमै सरस कपोल कला कुशला हर्षाई ॥७७॥
यहि विधि चाहत मिलन रसिक वल्लभ सों मुनिजन।
कीनी बहु वर विनय नम्रता सहित मुदित मन ॥७८॥
मन में कीन विचार रसिक चूड़ामणि छबिधर।
लखि मेरो गुण रूप बिके मुनि जन यहि अवसर ॥७९॥
पर इन सङ्ग न उचित रास ये पुरुषा कारा।
रास नायिकन केर पुरुष को नहिं अधिकारा ॥८०॥
याते रसिक नरेश मुनिन बहु बिधि समुझाई।
तहँ ते दियो हटाय सबन को नेह जनाई ॥८१॥
इधर नवल नायिका यक्ष कन्या सुकुमारी।
पगि प्रीतम के प्यार करैं कल केलि सुखारी ॥८२॥
भुजङ्गेश सम सुभग पिया की भुज में हर्षित।
अपनी भुजा फसाय ग्रहण करि मृदु हँसि प्रमुदित ॥८३॥
गावहिं कोमल कण्ठ कलित कल्लोल मचावहिं।
मीन सरिस प्रिय नयन चयन प्रद आनँद पावहिं ॥८४॥
सब जग को सुख देहिं सरस प्रिय राग सुनाई।
सुनि सो शब्द रसाल विश्व आनन्द समाई ॥८५॥

शङ्ख सरिस पिय कण्ठ माहिं भुज धरि कोइ बाला ।
झुलवति भरि अनुराग मंजु मनहरन रसाला ॥८६॥
गावै कोइ पिय गीत पियै हँसि हिय लपटाई ।
प्रीतम मुख माधुरी मंजु लखि मोद बढ़ाई ॥८७॥
यहि विधि सब वर वाम पिया के प्यार समानी ।
करहिं केलि कमनीय लहैं सुख स्वाद सयानी ॥८८॥
धनि इन सबको जन्म पिया को लहि आलिङ्गन ।
रशिकेशहिं रस देहिं भरीं हिय परम उमङ्गन ॥८९॥
जिन को जीवन प्रान प्यार सों अङ्क बिठाई ।
निरखत वर बिधु बदन विमल हँसि हिय ललचाई ॥९०॥
दृग सों दृगन मिलाय अधर रस पियत छबीले ।
पावत परमानन्द परम गुण गण गर्वीले ॥९१॥
चूमत अमल कपोल रसिक रस वर्द्धनिहारे ।
"सीताशरण" अधार प्रेम लम्पट सुकुमारे ॥९२॥
कोइ विधु बदनी वाम यक्ष कन्या सुकुमारी ।
पकरि पिया की बाहु उरोजन पर निज धारी ॥९३॥
चुम्बति पिय मुख कंज मंजु हिय प्यार बढ़ाई ।
पावइ परमानन्द निरखि नित नवल निकाई ॥९४॥
मदनबाण वर सदृश स्वनख हँसि पिय की भुज पर ।
चाही करन प्रहार किन्तु सकुचीं अति डर कर ॥९५॥
पिय मृदुलता बिचारि परम अनुराग वती तिय ।
नाहिन नख छतकिया दुलारति भरि उमङ्ग हिय ॥९६॥

केहु नायिका नवीन केर नीवी खोलन हित।
प्रीतम अतिहठ करी निरखि सखि गन सो सकुचित ॥९७॥
गहि पिय के भुज युगल लाज सङ्कोच बिसारी।
अपर नायिका केर जङ्घ पर दीन बिठारी ॥९८॥
कोइ विधु बदनी बाम निरखि पिय की प्रिय झाँकी।
काम वाण से व्यथित परम उन्मत मद छाकी ॥९९॥
गाढ़ालिङ्गन कीन वाहि रसिकेश सुघर वर।
धरि ताके गल बाहँ कीन मर्दन उरोज पर ॥१००॥

दोहा--पुनि वाके रस मय मधुर अधर ललित अरुणार।
"सीताशरण" सनेह सनि, चाखत प्राण अधार ॥ ५ ॥

तेहि अलि के प्रिय अधर आम्रफल सम आभा युत।
चखत चतुर चित चोर चपल चूड़ामणि नृपसुत ॥ १ ॥
पुनि कोइ सखी प्रवीण परम लज्जा रस भीनी।
आनन्दाश्रु बहाय नयन नीचे को कीनी ॥ २ ॥
मृग शावक ज्यों नयन नवल राजीव लजावन।
कोइ वर यक्ष कुमारि लखी प्रीतम मन भावन ॥ ३ ॥
वाकी दशा निहारि प्रेम पूरित प्रिय नागर।
लगे मार्जन करन वदन विधु रति रस सागर ॥ ४ ॥
प्रेमिन मानद सतत रसिक वल्लभ प्रिय नायक।
स्वयंहुँ मान पियूष सुभग सागर सब लायक ॥ ५ ॥
पुनि सुमुखी सब वाम आत्म प्रिय नवल पिया को।
युगल युगल सखि पकरि नटत अति ताप हिया को ॥ ६ ॥

सब सखि रहीं मिटाय पकरि कर नवल छबीली ।
पिय को सकल नचाय प्रेम पूरित रिझवीली ॥ ७ ॥
सब को पालन हेत सुरुचि प्रीतम उदार तर ।
जितनी अलिगण रहीं रूप अपने उतने कर ॥ ८ ॥
युगल युगल सखि मध्य प्राण जीवनधन राजत ।
दे सबके गलबाहँ रसिक मनहर रस छाजत ॥ ९ ॥
सब के सन्मुख लसत श्याम सुन्दर रघुनन्दन ।
नृत्यति भरि अनुराग रँगे रतिरस जग वन्दन ॥१०॥
चक्राकार बनाय रास मण्डल आली गन ।
नृत्यत भरि अनुराग गान गावत प्रसन्न मन ॥११॥
नृत्यहिं लै लै भँवर सुदर्शन चक्र सरिस वर ।
चलत सखिन को चक्र मध्य में लसत सु छबि धर ॥१२॥
घूमहिं अतिसय वेग भरीं सब नवल नागरी ।
पिय को सुख दातार रूप रस निधि उजागरी ॥१३॥
इन सम सुन्दर रास अन्य काहू नहिं कीना ।
रास नाम करि सत्य पियै अतिसय रस दीना ॥१४॥
रासस्थली विचित्र नवल वर बसन सुशोभित ।
मणि माणिक मुक्तादि रत्न लखि-लखि मन लोभित ॥१५॥
भूषण विविध प्रकार दिव्य तर पहिरे वाला ।
नृत्यत पिय के सङ्ग रङ्ग रँगि गीत रसाला ॥१६॥
गावहिं सहित सनेह सुभग सखि गन हर्षाई ।
पावहिं परमानन्द प्यार पिय को अति पाई ॥१७॥

सो सुख सिन्धु सुरास मध्य नटवर नागर पिय ।
मणि भूषण भूषिता सु भुज निज अति प्रसन्न हिय ।।१८।।
विद्युत पुंज प्रकाश करन हारी मन हरनी ।
श्री विदेह नन्दिनी मंजु मूरति रस भरनी ।।१९।।
तिन को कण्ठ लगाय प्राण वल्लभ रसिकेश्वर ।
करत विनोद विहार विपुल बिधि हँसि हृदयेश्वर ।।२०।।
तेहि सुठि सुन्दर रास मध्य मैथिली मधुर तर ।
करि पिय को निज स्ववश भर्तृ का मद उर में भर ।।२१।।
हो अतिसय उन्मत्त पियै रस रङ्ग रँगाई ।
दीनो परमानन्द प्रेम रस स्वाद कराई ।।२२।।
सुठि सौन्दर्य्य रसाल महाँ माधुर्य्य लखाई ।
रूप अनूप सनेह शील वश करि रघुराई ।।२३।।
मुख लावण्य सु प्यार सु गुण गण प्रगटि दुलारी ।
करि सर्वथा अधीन पियै अति कीन सुखारी ।।२४।।
जे अति उत्तम वाम सबनि को मान मथन कर ।
सब पर प्यार जनाय कियो सत्कार मोद भर ।।२५।।
जगमें जेती वाम परम सुन्दर सुकुमारी ।
रूप शील गुण भरीं मंजु मूरति मन हारी ।।२६।।
ते सब लखि मैथिली रूप गुण शील मधुर तर ।
विनही गथ विक गईं सियै स्वामिनी मान उर ।।२७।।
पावहिं परमानन्द मनावहिं मङ्गल सिय को ।
करैं कलित वर केलि जनावैं भाव सु हिय को ।।२८।।

यहि विधि नवल किशोर रास रस लम्पट मनहर ।
करत मैथिली सङ्ग पूर्ववत रास रसिक वर ।।२६।।
शोभित सङ्ग अनूप रूप अगणित असंख्य वर ।
ललनागन रमनीय परम कमनीय मोद भर ।।३०।।
आयो सुभग बसन्त रास रस रसिया रघुवर ।
चाहत करन बसन्त केर उत्सव विशेष तर ।।३१।।
याते पुनि रसिकेश रास की स्वरुचि जनाई ।
लखि सहचरी समूह हर्ष हिय अति सुख पाई ।।३२।।

❀ बसन्तोत्सव लीला प्रकरणम् ❀

अब वे यत्त कुमारि कमल नयनी मन हारी ।
पतिव्रता गण मध्य सकल सज्जन सुखकारी ।३३।।
दायक परमानन्द मैथिलिहिं पिय के सङ्गा ।
देखा सहित सनेह रँगे अति रति रस रङ्गा ।।३४।।
पागीं परमानन्द स्वामिनिहिं निरखि अली गन ।
कीन रास प्रारम्भ परम सुख सनी मुदित मन ।।३५।।
रासस्थलीं समीप चहूँदिशि सुठि रसाल वर ।
विटप सुशोभित खड़े नवल पल्लव प्रमोद कर ।।३६।।
जड़ते शिखर प्रयन्त प्रफुल्लित अति प्रिय लागत ।
गुंजत तिन पर भ्रमर मधुर सुनि मनसिज जागत ।।३७।।
सघन सु पल्लव लसत मेघ सम श्याम घटा अस ।
सरस सुगन्धित भरित काम पूरण सनेह रस ।।३८।।

रसे सु सेवा करत युगल सिय पिय छवि धर की।
तेहि क्षण महिला वृन्द कलित प्रिय गीत मधुर की ॥३९॥
वर्षा करत सिहाय अटा ऊँचे चढ़ि मुद भर।
वर्द्धक हास विलास मधुर मनसिज उछाह कर ॥४०॥
महल सु छज्जन खड़ीं कछुक आँगन में सोहैं।
गावहिं मङ्गल गीत सुनत मुनि मन जन मोहैं ॥४१॥
जेहि सुनि रसमय सघन आम्र डालिन पर शोभित।
कोकिलाद प्रिय पक्षि मधुर स्वर आनँद लोभित ॥४२॥
बोलत कलरव होत सुनत सब सखी समाजा।
हो एकत्र एक सङ्ग राग गावत ऋतु राजा ॥४३॥
सुनि बसन्त वर गीत भुवन त्रय आनँद छायो।
अखिल लोक हर्षाय विमोहित अति सुख पायो ॥४४॥
घर घर उत्सव करैं मुदित मन नर अरु नारी।
प्रेमानन्द प्रवाह मगन तन सुरति बिसारी ॥४५॥
बीती अब ऋतु शरद समय आनँद को आयो।
अस बिचारि अलि वृन्द मगन मनसिज उमगायो ॥४६॥
यहि विधि कोठे उपर रत्नमय दिव्य सिंहासन।
वर विचित्र अस तरन विचे सुठि शुभ्र प्रकाशन ॥४७॥
तामधि मणिमय कमल अमल प्रतिभा प्रकाश कर।
दल प्रति लसत अनूप रूप ललना प्रमोद भर ॥४८॥
लखि जिनकी कमनीय कान्ति बहुरमा भवानी।
उमा शची शारदा सकल सुर नारि लजानी ॥४९॥

मन्द मधुर मुसुकान सरस प्रिय अति मनहारी ।
पिय को निज वश करनि करति सब भाँति सुखारी ॥५०॥
तिन सब सखियन मध्य मधुर मूरति प्रिय दम्पति ।
विलसित विशद विनोद वलित सुषमा सत सम्पति ॥५१॥
गावहिं अलि प्रिय गीत वाहि क्षण पुर की नारी ।
अवधपुरी की बधू मधुर मंजुल मनहारी ॥५२॥
गावत मङ्गल गीत राम गुण रूप शील युत ।
जावत रघुवर निकट लखन हित सुषमा अद्भुत ॥५३॥
श्री महराज कुमार निकट आईं रस मातीं ।
उर उत्साह बढ़ाय प्रेम विह्वल सकुचातीं ॥५४॥
निरखत कलित कटाक्ष युक्त मुसुकान मन्द तर ।
पागीं परमानन्द राखि उर में सु मूर्ति वर ॥५५॥
अन्तष्करण मझार करैं आस्वादन जस रुचि ।
दीनो सर्वस वारि विमल भावना सरस शुचि ॥५६॥
वदत परस्पर वयन चयन प्रद सब नव वाला ।
हे अलि श्री महराज सुवन सुठि सुखद रसाला ॥५७॥
इनकी मृदु मुसुकान स्वाद लखि सुधा मुधा सम ।
लागत सब विधि हमहिं न इन सम कोउ ये अनुपम ॥५८॥
यहि विधि सब पुर बधू परस्पर बातैं करहीं ।
लखत ललन माधुरी मधुर हिय में सुख भरहीं ॥५९॥
रघुवर रूप समुद्र माहिं अवगाहन करि के ।
लहत परम रस स्वाद भाव उज्वल हिय भरि के ॥६०॥

यदपि उचित यह रहा बधुन लखि श्री नृपनन्दन ।
अपर ठौर चलि जायँ सियै तजि प्रभु जग बन्दन ॥६१॥
किन्तु निरखि तिन केर परम आवेश प्रेम कर ।
दृगन ओट नहिं भये प्रेम पूरक उदार तर ॥६२॥
उर की जानन हार सकल विधि आर्त बन्धु प्रिय ।
नहिं वियोग दुख दियो तिनहिं रसिकेश विमल हिय ॥६३॥
तिन ने विरह वियोग केर भय मानि मंजु वर ।
विग्रह परम रसाल कियो धारण अपने उर ॥६४॥
पुनि यों बोलैं वयन परस्पर हे सजनी प्रिय ।
चन्द्र मुखी जो धर्म कर्म सङ्कोच करै हिय ॥६५॥
उस सुकर्म अरु धर्म काहिं धिक्कार महाना ।
जो प्रगटै सङ्कोच लखन में रूप निधाना ॥६६॥
यह उदार सौन्दर्य्य महा माधुर्य्य कुँवर को ।
करि न सकैं हम पान परम धिक धिक अस डर को ॥६७॥
लहन देत नहिं स्वाद हमनि लज्जा उपजावै ।
यद्यपि सन्मुख अहैं तदपि असमर्थ बनावै ॥६८॥
यह ही क्या कम सखी अधिक तर हम अनुमानत ।
इनको दर्शन लह्यो हमनि यह निज जन जानत ॥६९॥
अपनी प्रजा विचारि छोह राखत मनमाहीं ।
यह ही मम बड़भाग रहे सखि कछु घटि नाहीं ॥७०॥
ना जानै केहि पुण्य पुंज की कृपा प्रसादा ।
यहि पुर मिला निवास इनहिं लखि भो अह्लादा ॥७१॥

अस कहि सब पुर बधू पुष्प सरसों अक्षत वर।
केशर रङ्ग मिलाय सुभग मोती जव अंकुर ।।७२।।
अवरख अपर अनेक सु मङ्गल वस्तु लिये कर।
गावत मङ्गल गीत करत पूजन सनेह भर ।।७३।।
चक्रवर्ति नृप सुवन केर पूजन करि वामा।
गावत गीत बसन्त मधुर मंजुल अभिरामा ।।७४।।
साने सरस सनेह सु मृदु स्वर परम मनोहर।
गावहिं राग बसन्त प्रवल अभिलाप हृदय भर ।।७५।।
चाहैं सब पुर बधू मनहिं मन विधिहिं मनावैं।
हे विधि कथनेउ जन्म यही मम पिय वनि जावैं ।।७६।।
ये कमनीय किशोर मंजु मूरति प्रिय पावन।
लोकोत्तर रस सिन्धु प्रेम लम्पट मन भावन ।।७७।।
सुठि सुकुमार उदार भाव भूपित नव नागर।
सुषमागार सुशील सरल मृदु चित करुणाकर ।।७८।।
पूरित प्रेम पियूष प्रेम पूरक प्रिय मनहर।
गुणागार सुख सार भाव ग्राहक नव छवि धर ।।७९।।
जौं यह मम पति होयँ मोहिं निज प्रिया बनावैं।
तब हो जन्म कृतार्थ परम आतम सुख पावैं ।।८०।।
वर्णत श्री मद् सूत यही निज मन सब वाला।
सोचत लखि छविधाम मधुर प्रिय रूप रसाला ।।८१।।
सहजहिं परम दयालु राम रघुवंश कुँवर वर।
स्वजन सुखद सर्वदा शील सागर करुणाकर ।।८२।।

याते इन पुर बधुन केर रुचि रखत रसिक वर।
जाने को नहिं कहत परम सङ्कोच राखि उर ॥८३॥
न तो अन्य नायिकन केर सहवास त्याग कर।
करत स्वकीयन सङ्ग सदा सहबास मोद भर ॥८४॥
किन्तु ग्राम की वधू और पूजन हित आईं।
यही मानि सङ्कोच रसिक वल्लभ न पठाईं ॥८५॥
चली जाव तुम लोग कहत सकुचत श्री रघुवर।
सुनत रहे प्रिय गीत बधू सब गावहिं मुद भर ॥८६॥
चक्रवर्ति नृप केर एक दासी तेहि अवसर।
महलन ते तहँ गई जहाँ विहरत श्री रघुवर ॥८७॥
करि सु मङ्गलाचार हृदय में अति दुलार भर।
बोली हे प्रिय वत्स श्याम सुन्दर सु शील तर ॥८८॥
हे रघुवीर उदार पिता मातन मन भावन।
राम भद्र सुकुमार ललन लोने प्रिय पावन।८९॥
चलिये महलन माहिं पिता जी तुमहिं बुलावत।
सुनि प्रभु स्वागत कियो लाज बस अति सकुचावत ॥९०॥
ग्राम बधुन सन कहि न सके रघुवीर जात हम।
अब अपने घर काहिं जाहु प्रमुदित मन मिलि तुम ॥९१॥
अखिल अवनि महिपाल महा भय जाको मानत।
निज शिर केर किरीट रत्न पादुकन लगावत ॥९२॥
ऐसे पिता महान सुनत तिनकी आयसु वर।
सब सखियन के मध्य राखि मैथिलिहिं सुछबिधर ॥९३॥

चले मन्द मुसुकाय धर्म गुरु स्वजन परायन ।
श्रीपितु दर्शन हेत लहत अतिसय चित चायन ॥९४॥
गये कछुक दिन बीत अस्तु भय मन में मानी ।
गये रसिक शिरमौर तबहिं पुर बधू सयानी ॥९५॥
रूपामृत करि पान प्रवल अभिलाष हृदय भर ।
वन्दि मैथिली चरण कंज आयसु लहि निज घर ॥९६॥
गईं सकल वर वाम परम अभिराम राम छबि ।
छाकीं अति अकुलाय वदतजिन को यश सुठि कवि ॥९७॥
इधर जाय रघुबीर पिता पद वन्दन करि के ।
पावत परमानन्द प्रेम अतिसय उर भरि के ॥९८॥
लहि तिनको वात्सल्य परम सुख तिन्ह को दीहा ।
जो पितु आयसु दई मुदितमन सो कृत कीहा ॥९९॥
पुनि हिय भरि अनुराग जाय माता ढ़िग रघुवर ।
पूजन करि मन मुदित पाय वात्सल्य हर्ष कर ॥१००॥

दोहा—करि कछु वाल विनोद वर, मातन को सुख वोर ।
पावत मृदु पकवान कछु, अतिसय प्रेम विभोर ॥ ६ ॥

मातन स्वकर पवाय ललन को बहुत दुलारो ।
कियो प्यार हर्षाय लह्यो सुख स्वाद अपारो ॥ १ ॥
तिन सबको सुखदेय वन्दि पद आयसु पाई ।
चले चतुर चितचोर राजनन्दन रघुराई ॥ २ ॥
पहुँचे भरि अनुराग जहाँ मैथिली सखिन सँग ।
चितवत पिय को पंथ रहीं रँगि पिय के रस रँग ॥ ३ ॥

रास रसिक रस सिन्धु रास मण्डप में आकर ।
भेंटे भरि अनुराग प्रिया से पिय सुषमाकर ॥ ४ ॥
उधर सकल पिय मातु यही अपने मन जानत ।
राघव रहि मम निकट सतत हमको सनमानत ॥ ५ ॥
सबसे अति प्रिय मोहिं सदा मम आज्ञा पालक ।
करत प्रेम अति हमहिं सुखद निज जन खलघालक ॥ ६ ॥
नृप परिजन परिवार सकल मन्त्री पुर वासी ।
निज मन करत विचार प्रेम मो पर सुख रासी ॥ ७ ॥
करत सबन ते अधिक मानिअस अति सुख पावत ।
कोमलता सरसता सरलता अरु गुण गावत ॥ ८ ॥
ऐसेहि सब वर वाम सदा अपने मन जानत ।
सबसे जीवन प्राण अधिक मोकहँ सन मानत ॥ ९ ॥
सन्तत रहि मम निकट देत हमको सुख स्वादा ।
रँगि हमरे रस रङ्ग लहत अहनिशि अह्लादा ॥१०॥
इमि रघुराज किशोर निदरि वासव को भोगा ।
भोगत प्रेम विभोर स्वपन्न में नहिं दुख रोगा ॥११॥
निखिल नायिकन संग रसत सब काहिं रमाई ।
पावत परमानन्द प्रेम पालक रघुराई ॥१२॥
यहि विधि उत्सवजिते अहैं एक वर्ष मझारी ।
सबसे अधिक बसन्त सुखद रसमय मनहारी ॥१३॥
सबको परम निचोड यही उत्सव मन भावन ।
सबसे अधिक प्रशंसनीय पिय मोद बढ़ावन ॥१४॥

अस्तु वदत इमि नयन विमल वर सूत सुजाना ।
यह बसन्त की केलि कलित कृत कृपा निधाना ॥१५॥
इन सम भयो न अहै कदा कोउ होनेउ नाहीं ।
इन समान वर शक्ति अछत केवल इन माहीं ॥१६॥
जगमें को अस पुरुष करै समता रघुवर की ।
मानव की को कहै नहीं गिनती केहु सुर की ॥१७॥
अपर लोग जो किये करत करिहैं जो आगे ।
ते रघुबर ही केर करत अनुकरण सु रागे ॥१८॥
जो ऐसा मन जान करै उत्सव बसन्त वर ।
वे स्वाभाविक भाव सिद्ध होकर अनुभव कर ॥१९॥
पइहैं अतिरसस्वाद विमल झाँकी रघुवर की ।
लखि हिय कुंजमझार परम सुषमाछविधर की ॥२०॥
इमि बोले श्री सूत शरद शशि सरिस प्रकाशक ।
श्रीरघुचन्द्र नरेश केर दुख द्वन्द विनाशक ॥२१॥
भई मकर के सूर्य माहिं जो करी रसिक वर ।
जीवन धन हृदयेश प्राण वल्लभ उदार तर ॥२२॥
जो हम तुमसे कही सुखद श्रवणन मनहारी ।
वाणी जो रस लहत होत सुख स्वाद आपरी ॥२३॥
सुख सुहाग सौभाग्यवती कमनीय सुतिय वर ।
तेहि को कर्ण सु फूल सरिस अति सरस मधुर तर ॥२४॥
ताको कदा न तजति सतत सज्जन जन पीवत ।
पावत अतिसय स्वाद सुखी होकर जग जीवत ॥२५॥

करि आये सर्वदा करत करिहैं पुनि मज्जन ।
चहैं मधुर रस स्वाद करैं इसमें नित मज्जन ॥२६॥
श्री रघुनन्दन केर रास लीला रस सागर ।
जो कीनी वन बीच सखिन सँग पिय नव नागर ॥२७॥
जेहि में सुर वर नारि मीन इव विचरत सुख युत ।
पगीं परम रस स्वाद रङ्ग पावत अति अद्भुत ॥२८॥
यह रघुनन्दन केर रास रस सुधा सु कण लहि ।
सुर पुर में नित करैं रास अनुकरण यथा महि ॥२९॥
सुर सरितहु से सरस परम पावन अघ हारी ।
रास केलि कमनीय हृदय रस वर्द्धन हारी ॥३०॥
जिमि सुर सरिता माहिं बहत निर्मल समूह जल ।
तिहि यहि में बहु भाँति ललित लीला सुभाव मल ॥३१॥
अवगाहै जो सुजन सतत यहि सरिता माहीं ।
होवै परम पवित्र रहे किंचित मल नाहीं ॥३२॥
हो निर्मल सब भाँति भाव मल जागत हिय में ।
नाशत विषय विकार प्रेम प्रगटत सिय पिय में ॥३३॥
करत जो नित अनुसरण हृदय अति विमल बनावति ।
प्रीति प्रतीति बढ़ाय अन्त में पियै मिलावति ॥३४॥
प्रगटत विविध प्रकार भाव सुन्दर हिय माहीं ।
चित चित चोरहि निरखि भूलि जावत कहिं नाहीं ॥३५॥
दर्शत कुंज निकुंज केर कल केलि सुहावन ।
परिकर युत सिय पीय रूप मंजुल मन भावन ॥३६॥

हुलसत नित हिय माहिं अनिशि मोद मगन मन।
दर्शत स्वप्न समान जगत एक सरिस महल बन ॥३७॥
होवै त्रिगुणातीत सतत जो यहि को ध्यावै।
निश्चय "सीतशरण" त्यागि तन कुंज समावै ॥३८॥
पावै युगल किशोर केर कैङ्कर्य स्वाद नित।
निरखि युगल माधुरी सुधा नित सावधान चित ॥३९॥
प्रीतम प्रियै सदैव प्यार पगि लाड़ लड़ावै।
जो चरितामृत सिन्धु माहिं निज चित्त लगावै ॥४०॥
जयति युगल चित चोर परमजीवन धन मोरे।
जय जय रास विहार पगे रस निधि दोउ भोरे ॥४१॥
जयति युगल सरकार प्यार पूरित रसेश वर।
जय जय सुषमा सदन लाड़िली लाल मोद घर ॥४२॥
जयति युगल रिझवार परम रस रङ्ग समाये।
जय जय निरखि निशेश वदन दोउ प्रेम बढ़ाये ॥४३॥
जयति मैथिली मंजु पिया की जीवन मूरी।
"सीताशरण" अधार चहौं पद पंकज धूरी ॥४४॥
जयति अवध नृप ललन परम लोनी छवि धारे।
जय जय "सीताशरण" अमल हृदयेश हमारे ॥४५॥
जयति स्वामिनी सीय पीय पद प्रेम प्रकाशिनि।
जय जय सुषमा भरीं पिया सँग रास विलाशिनि ॥४६॥
जयति जनेश कुमार केलि लम्पट सुकुमारे।
जय जय सुषमा सदन मदन मद मर्दन हारे ॥४७॥

जयति लाड़िली मोर सतत पिय को सुख दानी।
जय जय श्री मैथिली मंजु मूरति रस सानी ॥४८॥
जयति युगल रस केलि कला भीने सब परिकर।
"सीताशरण" अधार जयति जय जय उदार तर ॥४९॥
जयति युगल सरकार काहिं रस वर्द्धन हारे।
"सीताशरण" हमार जयति जय प्राण अधारे ॥५०॥
दो०—जय जय जय सिय स्वामिनी, जय जय नृपति कुमार।
जय जय प्रिय परिकर निकर, 'सीताशरण' अधार॥

इति श्री युगल रहस्य माधुरी विलासे मकर श्रीराम रासे "सीताशरण" सुमति प्रकाशे यक्ष कन्या रास प्रकरणम् चतुर्दशोऽध्यायः सम्पूर्णम् भवतु।

* पंचदशोऽध्यायः *

॥ कुम्भार्के नागकन्या रास प्रकरणम् ॥

छन्दरोलाः—

सुन्दर तर शृंगार सजीं प्रिय रूपवती अति।
पूर्ण अवस्था युक्त प्रेम पूरित निर्मल मति॥ १॥
तिनको अर्पण कियो सुधा सम सुभग भोग वर।
पावत प्राण अधार परम रिझवार हर्षि उर॥ २॥
सुखद सरस सुरधेनु कल्पतरु सरिस शीलयुत।
सुन्दर स्वाद समेत अमित व्यंजन अति अद्भुत॥ ३॥
पावत परम प्रमोद पगे मैथिली सङ्ग पिय।
लहतमहा सुखस्वाद सखिन संयुत सुहृद हिय॥ ४॥